पास पहुंचा, तब उधर से एक बिराह्मन, और एक भाट को आते देखा, और जब नज़दीक पहुंचे तो उन्हों ने असीस देकर कहा * "महाराज! आप के द्वारे पर हम ने बहुत दिनों सेवा की, पर हमारा भाग ही ऐसा था कि कुछ उसका फल न मिला" * तब राजा ने सुनते ही, बिराह्मन को छड़ी दी, और भाट को माला, और उस का भेद सब कह दिया. आसीस देकर वे दोनों कहने लगे, "महाराज! इस समैं में तुम राजा करन हो, तुम्हारे बराबर दानी आज पृथिवी में दूसरा और नहीं," यह कहा और बिदा होकर गये * राजा भी अपने स्थान में गया, दीवान, प्रधान सब आन हाज़िर हुए, शहर की तमाम रऐयत खुश हुई, और वे दोनों झगड़ालू भी यह खबर सुन तुर्त आकर राजा के साम्हने खड़े रहे, और कहा, "महाराज! आपने जो छः महीने का क़रार किया था, सो बीत गया, अब हमारा न्याव कर दीजिये," यह सुन कर राजा बोला कि, "बिना बल करम कुछ काम नहीं आता, और बिना करम बल काम नहीं आता इस्से ये दोनों बराबर हैं." इस को सुन, संतोष कर, बाद छोड़, दोनों अपने२ घर को गये, "ऐ राजा भोज! यह अहवाल मैं ने तुझ से इस लिये कहा है कि तू समझ कर यह खयाल अपने जी से उठा, इस वास्ते कि जो यह लियाक़त रक्खे सिंहासन पर बैठे." वुह भी जोग राजा का बीत गया; फिर उस के दूसरे दिन भोर होते ही सिंहासन पर बैठने को तैयार हुआ कि इतने में *

* कामकंदला छठी पुतली *

हंसी और कहने लगी कि, "जिस आसन के ऊपर राजा बिक्रम ने पांव धरा हो, तू उस के बैठने के लायक़ कब है, ऐ पापी! तू अपने होश को गुम न कर, क्योंकि तुझे देख मेरा मन मलीन होता है, और इस सिंहासन पर वही बैठे जो बिक्रम सा राजा हो," तब राजा बोला, "तू कह बिक्रम ने क्या२ करम किये हैं?" वुह बोली, "तू सुचित होकर बैठ, मैं नृपति की कथा कहती हूं. एक दिन नृपति अपनी सभा में बैठा था, एक बिराह्मन ने आन कर एक अचरज की बात कही, कि उत्तर दिसा में एक बड़ा बन है, और उस बन में एक परबत, और उसके आगे एक तालाब, और उस में एक खंभ फटिक का, जब सूरज निकलता है, तब उस सरोवर में से वुह खंभ भी निकलता है, और जों२ सूरज चढ़ता है तों२ खंभ भी बढ़ता है, जब ठीक दो पहर होता है, तब वुह खंभ सूरज के रथ के बराबर जा पहुंचता है, तब उस जगह रथ खड़ा रहता है, और वहां जब सूरज कुछ भोजन कर लेता है, तब रथ चल निकलता है, और खंभ भी घटता जाता है, निदान शाम के वक़्त पानी में लोप होजाता है, इस को देवता या देव कोई नहीं जानता, यह बात बिराह्मन से सुन कर राजा ने अपने मन में रक्खी, ज़ाहिर न की, उस के तईं कुछ रुपये दे बिदा किया, और ताल बेताल को याद किया, वे दोनों बीर आकर हाज़िर हुए, उन्हों ने कहा हमें जो इस वक़्त आप ने याद किया है, सो आज्ञा कीजिये, कहिये स्वर्ग को लेजावें, कहिये

पाताल को, कहिये समुद्र पार, इन तीनों लोक में जहां आप की मरज़ी हो तहां ले चलें. तब हंसकर राजा ने कहा, एक कौतुक देखने हम जाया चाहते हैं, सो वुह उत्तरा खंड में है, वहां तुम ले चलो * यह बात सुनकर बीर कांधे पर चढ़ा राजा को ले उड़े, और उस जगह तुर्त जा पहुंचाया: राजा ने वुह तालाब देखा कि चारों घाट उसके पुख़्तः हैं, हंस, बगले, उस में फिरते हैं और मुर्ग़ाबियां, चकोरें, पनडुबियां, कलोलें करती हैं, कंवल के फूलों पर भौंरे गूंज रहे हैं, मोर बोल रहे हैं, कोयल[27] कूक रही हैं, और तरह बतरह के पंछी कलाम में हैं, फूलों की सुगंधों के साथ पौन चली आती है, और मेवः दार दरख़्त की डालियां लचके खाती हैं * राजा यह समां देखकर बहुत ख़ुश हुआ, रात भर वहीं रहा जब सुबह हुई सूरज निकला, जो कुछ कि बिराह्मन ने कहा था वुह सब वहां देखकर बीरों से कहा, एक बात मेरे जी में आती है, कि मेरे तईं ले जाकर इस खंभ पर बिठला दो, और भगवान का ध्यान कर अपने स्थान को जाओ, तब बीरों ने खंभ पर ले जाकर बिठला दिया, और वे अपने मकान कोगये, जों२ वुह सतून बढ़ने लगा तों२ राजा अपने दिल में ख़ौफ़ करने लगा, जितना सूरज के नज़दीक पहुंचता था, उतना ही गर्मी से जला जाता था, निदान सूरज के निकट पहुंच जल कर अंगारा होगया * जब खंभ बराबर रथ के पहुंचा, और रथ बान ने एक मुर्दा जला हुआ देखा, अपने रथ के घोड़ों की बाग खैंची, घोड़े अटके, सूरज ने झुक कर देखा, कि खंभ पर जला हुआ एक आदमी लगरहा है, सूरज जाहिर कर

बोला, यह साहस आदमी का नहीं, यह कोई जोगी है, या कोई देवता, या गंधर्व, इस मुर्दे के होते मैं इस जगह किस तरह भोजन करूंगा * यह कहकर सूरज ने अमृत ले इस पर छिड़क दिया, राजा राम२ कह पुकार उठा, और देखकर सूरज को दंडवत कर हाथ बांध कहने लगा; धन्य भाग हैं मेरे! और मेरे कुल के जो आप के दर्शन पाये, और मैं ने इस जनम यज्ञ दान[२४] किये थे, उसी के सबब तुम्हारे चरन देखे, ज़िंदगी का जो फल था सो मुझे मिला * इच्छा संसार में सब को है, लेकिन जिस पर तुम्हारी मिहरबानी हो उसी को दर्शन मिलते हैं, यह सुनकर सूरज बोला तू कौन है, और तेरा नाम क्या है? तुझे देख कर मेरे जी में तरस आता है, अपना नाम तू जल्दी कह. तब राजा बोला स्वामी! नगर अंबावती में गंधर्व सेन जो राजा था, उसका बेटा मैं बिक्रम हूं, आप की कथा मैं ने एक बिराह्मन से सुनी थी, मुझे आप के दर्शन की इच्छा हुई, और आप की तवज्जुह से आप के चरन देखे अब मेरे तईं आज्ञा दीजिये तो मैं बिदा हूं * यह सुन सूरज ने हंसकर अपना कुंडल उतार कर राजा को दिया और कहा अब तू निडर राज कर. फिर सूरज का रथ आगे बढ़ा और खंभ भी घटने लगा, जब राजा अकेला रह गया, तब बीरों को बुलाया, बीर आकर हाज़िर हुए, उन के कांधों पर सवार होकर अपने मकान को आया, जब शहर में दाखिल होने लगा साम्हने से एक गुसाईं आया, उस ने राजा से अपने जोग की मति से कहा महाराज! * जो तुम कुंडल लाये हो, वुह मुझे दान दीजिये, और जस, धरम, बड़ाई, लीजिये,

राजा बोला ऐ जोगी मति हीन! ऐसा जोग तूने कब कमाया, जो तू कुंडल मांगता है, वुह सन्यासी कहने लगा, महाराज! मैं ने जोग तो कुछ नहीं साधा पर सुना था कि राजा बड़ा दानी है इस से मैं ने आप को जांचा, राजा ने हंस कर कुंडल उतार उस के हाथ दिया, आप ख़ुश होता ज़आ, अपने घर में आया." काम कंदला ये बातें सुना कर कहने लगी, "राजा! तुझ में भी इतनी क़ुदरत हो तो इस सिंहासन पर बैठ" * यह बात सुन राजा मन मलीन हो फिर गया. उस के दूसरे दिन राजा दिल में ग़ुस्सः खाता ज़आ फिर सिंहासन पर बैठने चला, और पुरोहित से कहा, "इस बेर मैं पुतली के रोकने से न रुकूंगा, आज सिंहासन पर ज़रूर बैठूंगा," जब राजा ने पांव उठा कर सिंहासन पर चाहा कि रक्खूं *

* कामोदी सातवीं पुतली *

पांव तले आन गिरी, राजा ने यह तौर देख दुखित हो, पांव खैंच लिया, और उस पुतली से कहा, "तू किस कारन चरन में आन गिरी?" तब उस ने कथा शुरूअ़ की, "हम जो हैं अबला सतयुग की हैं, राजा! तेरा अवतार कलियुग में. हम ने एक ही मर्द का मुंह देखा, और दूसरे का मुंह नज़र से नहीं देखा, हम पहिले अपना माजरा कहती हैं, कि बिश्वकर्मा ने तो हमें जनम दिया और बाज़बल राजा के पास हम आकर रहीं, उन ने राजा

बिक्रमाजीत को हमें दिया, वुह अपने घर ले आया, जब से हम उस्से बिछड़ी हैं, तब से कभी सुख नहीं पाया. "जो उस राजा के बराबर होवे सो इस सिंहासन पर बैठे." राजा बोला बिक्रम में वस्फ़ क्या थे? तू वे मुझ से बयान कर, तब वुह कहने लगी * "सुन राजा बिक्रम का अह्‌वाल. एक दिन वुह अपने घर में दो पहर रात को सोता था, और तमाम शहर नींद में यह ग़ाफ़िल था, जो किसी आदमी की आवाज़ न आती थी उत्तर दिसा नदी के पार एक स्त्री डाढ़ें मार के रो उठी; वुह आवाज़ राजा के कान पड़ी. राजा मन में चिंता करने लगा हमारे नगर में कोई दुखी आया है कि वुह अपने दुख से कूक मार२ रोरहा है. यह बात दिल में बिचार ढाल, तलवार हाथ में ले उधर को चला, और नदी किनारे पहुंच कर बसन छोड़ लंगोटा मार, पैर कर पार हुआ. क्या देखता है, कि एक अति सुन्दर, जवान नारी खड़ी कूक रही है. उस के पास जाकर राजा ने पूछा, "पुरुष का तुझे बियोग है, या पुत्र का तुझे सोग है, या तुझे सौत का साल है? इतने दुखों में किस दुख से तू रोती है, जो कुछ तुझे ब्यापा है सो मुझे कह." तब वुह कहने लगी "सुन राजा! हमारा बालम चोरी करता था, शहर के कोतवाल ने उसे पकड़ कर सूली दिया है, और मैं उसकी महब्बत से कुछ खाना खिलाने को लाई हूं, चाहती हूं उसे भोजन करवाऊं, पर सूली ऊंची है, और मेरा हाथ उसके मुंह तलक नहीं पहुंचता, इस दुख से मैं रोती हूं, और जितना जतन करती हूं." पहुंचने नहीं पाती नृपति ने कहा, "यह तो थोड़ी सी बात है, इस के वास्ते तू

क्या रोती है? उस्ने जवाब दिया, कि मुझे यह थोड़ी बज़त ही बड़ी है," तब राजा बोला, "मेरे कांधे पर चढ़ कर उसे खिला दे. वुह कंकालिन राजा के कांधे पर चढ़ी, उस सूली पर चढ़, चोर जो टंगा था उसे खाने लगी, रक्त मुंह से उसके राजा के बदन पर गिरने लगा. राजा मन में सोचा, कि यह कोई और है, और इसने मुझे धोखा दिया, अपने जी में राजा ने यह सोच कर पूछा, "कह सुन्दरी तेरा पिया भोजन करता है कि नहीं?" तब कंकालिन बोली इस से खाचुका, अब इस का पेट भरा, मुझे कांधे से नीचे उतार * जब हेठल उतरी राजा ने कहा, "उस ने चाह के खाया?" तब कंकालिन हंस कर बोली, "तू मांग जो तुझे चाहिये, मैं तुझ से बज़त खुश ऊई, मैं कंकालिन ऊं, तू मुझ से अपने जी में मत डर. वुह बोला, "मैं तुझ से क्या डरूंगा, और क्या मांगूंगा, तू ने तो मुई: मेरे कांधे चढ़ के खाया, तू मुझे क्या देगी?" वुह फिर बोली कि राजा तू इस ख़ियाल में मत पड़, कि मैं ने क्या किया, और क्यां न किया, जो तुझे इच्छा है सो तू मुझ से मांग ले * राजा ने हंस कर कहा, "अन्नपूर्णा मुझे दे, और जग में जस ले. वुह बोली, अन्नपूर्णा मेरी छोटी बहिन है, तू मेरे साथ चल, मैं तुझे दूंगी." इस तरह आपुस में दोनों वहां से बचन कर चले, आगे२ कंकालिन और पीछे२ राजा, नदी किनारे जा पऊंचे. वहां एक मन्दिर था, उसके द्वारे कंकालिन ने ताली मारी, और अन्नपूर्णा ने प्रगट होके उस्से कहा कि, "यह भूपाल कौन है?" वुह बोली, "यह राजा बिक्रम है, इस ने मेरी सेवा की है, और मैं ने इस्से बचन हारा है,

अगर मेरी मुहब्बत तेरे दिल में है, तो अन्नपूर्ना इसे दे." हंस कर उस ने राजा को एक थैली दी, और कहा, "इस में से जितनी खाने की चीज़ मांगोगे, सब पाओगे" * राजा ने हाथ फैला लेली, वहां से ख़ुश हो, नदी किनारे आन, असनान ध्यान कर, निचिंत हुआ कि एक बिराह्मन आन पहुंचा, उस को राजा ने बुलाया, और कहा, "कुछ भोजन करोगे?" उसने कहा मुझे, "भूख लगी हुई है, आप दें तो मैं खाऊं." राजा बोला, "क्या खाओगे, किस चीज़ पर तुम्हारी सुरत है?" वुह बोला, "इस वक़ पकवान खाऊंगा." राजा अपने जी में सोचने लगा, जो इस दम पकवान न पहुंचेगा, तो मैं बिराह्मन से झूठा हूंगा; इतनी बात मन में विचार, थैली में हाथ डाल कर जो निकाला तो देखा कि पकवान ही निकला. बिराह्मन ने पेट भर खाया, और बोला, "महाराज! भोजन तो मैं ने किया, अब इस की दछिना भी दीजिये." राजा ने कहा, "जो दछिना मांगोगे सो मैं दूंगा." बिराह्मन बोला कि, "यह थैली मैं दछिना पाऊं, तो आनंद से अपने घर जाऊं." थैली बिराह्मन को देकर, राजा अपने घर को चला * वुह इतनी कथा कहकर राजा भोज से फिर बोली कि इतनी मिहनत से थैली पाई, और बिराह्मन को देते बार न लगाई * ऐसा साहसी, और ऐसा दानी हो, तो सिंहासन पर बैठ; और नहीं तो पातक होगा. वुह भी महूरत राजा की टलगई * दूसरे दिन फिर राजा सिंहासन पर बैठने को आया तब

* पुष्पावती आठवीं पुतली ने कहा *

"राजा! तू ने जो सिंहासन पर बैठने का चित किया है, सो इसकी आस मन से छोड़ दे." राजा बोला, "मैं किस तरह छोड़ूं?" तब पुतली ने कथा शुरूअ की, "कि एक दिन बीर बिक्रमाजीत अपने दरबार में बैठा था, सब राजा मुजरे को हाज़िर थे उस वक़्त एक बढ़ई ने आकर सलाम किया, और कहा, "महाराज! मैं आप के दर्शन को आया हूं, और एक तुहफ़ः आप के लिये लाया हूं. राजा ने आज्ञा की कि," "ले आ." बढ़ई ने जो हिकमत का घोड़ा बनाया था, नज़र किया. राजा ने घोड़े को देखा उसे पूछा कि, "इस में क्या२ गुन हैं?" नज्जार ने कहा, "महाराज! इस में ये गुन हैं, न कुछ खाता, न कुछ पीता है, और जहां चाहो तहां ले जाता है, दरयाई घोड़े के बराबर है." घोड़ा उस वक़्त चालाकी से एक जगह ठहरता न था, कूद, फांद रहा था, और२ राजा देखता था, रीझता था, आख़िर को पसंद करके कहा कि, "इस को मैदान में फेर कर दिखा दो." ज्योंहीं उसने कोड़ा किया, फिर तो गर्द ही नज़र आती थी, और घोड़ा मअ़लूम न होता था, जब ऐसे गुन घोड़े में राजा ने देखे, दीवान को बुलाकर कहा, "लाख रुपये इसे दो." दीवान ने अर्ज़ की, "महाराज! यह काठ का घोड़ा, और लाख रुपये इनआम मुनासिब नहीं" * राजा ने दो लाख रुपये फ़र्माए, और उसे दीवान ने चुप के हवाले कर दिये; और अपने दिल में सोचा, जो कुछ और तकरार करूंगा तो और

बढ़ेंगे * वुह बढ़ई रुपये ले, अपने घर को गया. घोड़ा थान पर बांधा, और वुह चलते हुए कह गया था, कि इस पर सवार होते न कोड़ा कीजो, न एड़ मारियो. पर क़िसमत का लिखा कोई मिटा नहीं सकता, जो बात हुआ चाहती है होती है. कई दिन के बाद, राजा ने घोड़ा मंगवाया, और अपने मुसाहिबों से फ़र्माया कि, "कोई तुम में से सवार होकर इस घोड़े को फेरे, तो हम देखें." यह बात राजा से सुन कर एक२ का मुंह देखने लगा, घोड़े की चालाकी से कोई न चढ़ा, तब राजा झुंझला कर बोला, "घोड़े को साज़ लगा कर तैयार कर लाओ," यह बात सुनतेही, एक की जगह हज़ार आदमी दौड़े, और जलदी तैयार कर लाये. राजा सवार होकर वहां फेरने लगा, जितना कि वुह चाहता था कि आसन जमा कर घोड़े को अपने क़ाबू में लावे, रानों से निकला जाता था, और पारे की तरह एक जा ठहरता न था, छलावे की मानिंद छल बल कर रहा था. राजा ख़ुशी के मारे बढ़ई की बात भूल गया, और घोड़े को कोड़ा किया, चाबुक लगते ही आग बगूला होकर वुह ऐसा उड़ा कि समुद्र पार ले गया, और एक जंगल में दरख़्त के ऊपर से गिरा, आप रानों से निकल गया. राजा भी दरख़्त पर से लड़खड़ाता हुआ नीचे गिर पड़ा, और यह हालत हुई, कि नज़दीक मर्ग के पहुंचा * जब कितनी देर गुज़री, कुछ उसे होश आया, तब अपने दिल में कहने लगा, देश, नगर, राज पाट, रऐयत और अपने पराये सब के सब छूटे क़िसमत मुझे यहां ले आई, देखिये आगे क्या हो. यह मन में विचार कर धीरज बांध, उठ

कर वहां से आगे चला * ऐसे सघन बन में आ पड़ा कि निकलना फिर मुश्किल हुआ. सारे जों तों उस जंगल से भूला भटका इस दिन में सात कोस राह चल कर फिर एक ऐसे बन में आ पहुंचा, उस में यह अंधयारा था, कि हाथ को हाथ न सूझता था, और चारों तरफ़ शेर, गेंडे, चीते, बल्कि सब दरिंदे बोल रहे थे. उन की डरावनी आवाज़ें सुन कर राजा सहमा जाता था. कभी पूरब, कभी पच्छम, कभी दखिन, कभी उत्तर, भटका२ फिरता था, पर कहीं राह न मिलती थी * इस तरह दुख भोगता हुआ, पंदरह दिन के बअ़्द एक तरफ़ जा निकला. वहां एक तमाशा नज़र आया, कि एक मकान है और उस के बाहर एक बड़ा दरख़्त और दो बड़े कुए, उस दरख़्त पर एक बंदरिया बैठी है. कभी नीचे उतरती है, और कभी ऊपर चढ़ती है. राजा यह कौतुक छिपा हुआ देख रहा था, इतने में निगाह उस की ऊपर गई; क्या देखता है, कि उस हवेली पर एक बालाख़ाना है. जब दरख़्त पर चढ़गया तो देखा कि वहां एक पलंग बिछा है, और सब ऐश का असबाब धरा है, तब मन में कहा अभी ज़ाहिर होना अच्छा नहीं, पहले यहां मअ़्लूम करूं कि कौन आता है, और कौन जाता है. जब ठीक दो पहर दिन हुआ, एक सिद्ध वहां आया; बाईं, तरफ़ जो कुआं था, उस में से उसने एक तूंबा जल निकाला कि वुह बंदरिया उतर आई. सिद्ध ने एक चुल्लू पानी उस पर डाल दिया, वुह ख़ूब सूरत स्त्री हो गई, और उस रूपवती स्त्रिया से जोगी ने भोग किया. जब तीसरा पहर हुआ, जोगी ने कुए से पानी खैंच उस पर छींटा

मारा, फिर वुह बंदरी की बंदरी बन गई, और दरख़्त पर चढ़ी, जोगी भी पहाड़ की गुफा में जा बैठा, और अपना जोग करने लगा॰ राजा ने प्रगट हो, चतुराई कर, बाएं कुए से जल निकाल उस बंदरी पर छींटा मारा; फिर वुह ऐसी सुन्दर नारी हुई, कि गोया इंद्र के अखाड़े की अपसरा है, और राजा को देख लाज से मुंह फेर लिया. काम के बान राजा को आन लगे, प्रेम कर उस को अपने पास बिठा लिया, जब उस ने आंख प्यार की देखी, तब हंसकर बोली, "महाराज! हमारी ओर और दृष्ट से मत देखो, क्योंकि हम तपसी हैं, जो हम सरापेंगे तो तुम भस्म हो जाओगे" ॰ राजा बोला कि, "सराप मुझे न लगेगा, मैं राजा वीर बिक्रमाजीत हूं, कोई मेरा क्या कर सकता है, कि मेरे हुकम में ताल बैताल हैं." बिक्रम का नाम सुनते ही वुह बाला राजा के चरन पर गिर पड़ी, और कहा, "महाराज! तुम तो नरेश हो, हमारा उपदेश सुन, जल्दी यहां से जाओ, अभी जती आता है तो मुझे तुम्हें दोनों को सराप देकर जलाता है." तब नरपति बोला कि, "हम जती के साम्हने न होंगे, हमारा तो कुछ वुह कर न सकेगा, पर स्त्री हत्या हमें लेनी उचित नहीं, क्योंकि स्त्री हत्या लेने से आख़िर को नरक भोग करना पड़ता है" ॰ फिर राजा ने कहा कि, "उस सिद्ध ने तुझे कहां पाया?" तब वुह बोली, "काम देव मेरा बाप है, और पष्पवती मा॰ है, मैं ने उन के कुल में अवतार लिया था, जब बारह बरस की मैं हुई, तब उन्हों ने मुझे एक आज्ञा की, और मैं ने भंग की, तब माता पिता ने क्रोध कर जती को दे डाला, और अब मुझे

अपने बस करके इस बन में ले आया, बंदरी करके रूख चढ़ाया. इस प्रकार से एक बरस गुज़रा, कि मैं इस बन में हूं. सच है कि क़िसमत के लिखे को कोई मिटा नहीं सकता, यही सोच कर मैं चुपकी हूं" * तब राजा बोला, "मेरा जी चाहता है कि तुझे अपने घर ले जाऊं. वुह बोली, "महाराज! मेरे दिल में यही है पर क्यौं कर जाऊं, कि तुम्हारा नगर समुद्र पार है," तब राजा ने बचन दिया कि, "मैं तुझे ले चलूंगा, समुद्र लांघने की फ़िक्र कुछ मत कर, इस तरह ले जाऊंगा, कि तुझे मअ़लूम न होगा" * यों दोनों ने आपुस में बातें कर रैन आनंद से भोर की, और सवेरा होते ही पानी दूसरे कुए से निकाल, उस पर छिड़का कि फिर वुह बंदरिया हो कूद दरख़्त पर जा चढ़ी. राजा वहीं छिप रहा, उसी दम जोगी आन पहुंचा, वही जतन जोगी ने कर छिन एक वहां सुख्ता खुशी की. जब चलने लगा तब वुह सुन्दरी बोली, "महाराज! मेरी एक बिनती सुनिये, कुछ प्रसाद मैं तुम से मांगती हूं सो तुम मुझे दो" * यह सुन जोगी ने हंस कर एक कंवल का फूल उसे दिया, और यह कहा कि, "एक लअ़्ल यह हर रोज़ देगा, और कभी न कुम्हलायगा, इसे तू अच्छी तरह रखना." यह सुन कर उस ने अपनी चोली में रखलिया, और दिल उसका खुश हुआ, जोगी फिर उसे बंदरी बना के चला गया, राजा ने फिर कुंए से पानी निकाल कर, उसे नारी बनाया, और उसने यह कंवल का फूल राजा को दिखाया, और कहा, "महाराज! एक अद्‌भुत चरित्र है कि इस में से एक लअ़्ल रोज़ निकलेगा, यह बात बुद्धि बाहर है." राजा

ने कहा, "इस का अचरज नहीं, भगवान को सब क़ुदरत है, और वुह क्या२ नहीं करता!" ये बातें कर रात ऐश से काटी, प्रभात ऊआ, तब उस कंवल में से एक लअ़ल गिरा, दोनों ने यह तमाशा देखा, तब राजा ने कहा कि, "चंचल! अब यहां ठहरना उचित नहीं, [31] बिहतर यह है कि मेरे देस को चल." यह बात राजा की सुनकर वुह बोली, "सुनो महाराज! एक मेरी बिनती है मैं पांव पड़, कर जोड़, कहती ऊं, कि तुम बड़े दानी हो, ऐसा दानी मैं ने कहीं नहीं सुना, ऐसा न हो कि किसी को मुझे दान कर दो, मैं दासी हो, हर वक़्त तुम्हारी सेवा करूंगी" * तब राजा बोला, "यह नहीं होसकता कि कोई अपनी नारी परपुरुष को दे, वुह धर्मविरुद्ध, और लोक विरुद्ध है." इस तरह उसकी ख़ातिर जमअ़ कर दोनों बीरों को [32] बुलाया, वे आकर हाज़िर ऊए, उन से कहा, "हमारे देस ले चलो." बीर तख़्त पर बिठा उन को हवा की तरह ले उड़े. वे तो यों अपने शहर की तरफ़ गये, और जोगी यहां जो आया और उस सुन्दरी को न पाया, तो अचता पचता, मनमार, मुरझा रह गया. निदान राजा अपने नगर के पास आया, और सिंहासन से उतर, उस राजकन्या का हाथ थांभ शहर को चला. रस्ते में देखा उस ने कि किसी का एक ख़ूब सूरत लड़का दरवाज़े पर खेल रहा है, राजकन्या के हाथ में कंवल का फूल देखकर वुह लड़का रोने लगा, और बिलक२ बोला कि, "मैं यह फूल लूंगा." राजा ने कंवल उस के हाथ से ले लड़के को दिया, लड़का फूल ले हंसता ऊआ अपने घर में गया; राजा भी अपने मंदिर में जा बिराजा * जब सुबह ऊई

तब उस कंवल के फूल में से एक लअ़ल गिरा. लड़के के बाप ने उसे देख उठा लिया, और कंवल को छिपा रक्खा, इसी रंग से हर रोज़ लअ़ल निकला किया, कि एक दिन कितने लअ़ल वुह लेकर बाज़ार में बेंचने गया. यह ख़बर कोतवाल को ऊई कोतवाल ने उसे पकड़वा मंगवाया कि "तू बनियां, तूने ये लअ़ल कहां पाये?" यों कह उसे बऊत सियासत कर लअ़ल लेकर राजा के पास आया और सब वुह अह़वाल बताया; तब राजा ने कहा, "उस को भी लाओ और उस से पूछो कि तूने ये लअ़ल कहां से पाये" * बनिये को बुलाकर पूछा, "ये लअ़ल तू कहां से लाया?" और राजा ने उसे कहा, "जो तू सच मुझ से कहेगा तो मैं तुझे और भी दौलत दूंगा, और झूठ बोलेगा तो देस से निकाल दूंगा." उसने अ़र्ज़ की, "सुनो भूपाल! द्वारे खेलता था मेरा बाल, उस के हाथ में कोई कंवल का फूल देगया, और उसे आन मुझे दिया, मैं ने रात भर उसे अपने पास रक्खा, सुबह होते उस में से लअ़ल झड़ा, और हर रोज़ एक२ लअ़ल योंहीं निकलता है, और अब भी वुह फूल मेरे घर में है" * राजा ने कहा, "यह तो तू ने सब सच्ची बातें कहीं, अब तू ये लअ़ल अपने लेकर घर को जा, कोतवाल ने बऊत बुरा काम किया जो बे तह़क़ीक़ तुझे पकड़ लाया, इस का न्याव अब यह है कि लाख रुपये, तुझे कोतवाल डांड दे." यह कह कोतवाल से लाख रुपये दिलवा उसे घर को भेज दिया * ये बातें कर पुतली फिर बोली, "सुन राजा! बीर बिक्रमाजीत के गुन, और धर्म, तू मूर्ख है, कुछ उस की ह़क़ीक़त नहीं जानता, इस से ही राजा को तू अपने आगे

हीनकर मानता है, और अपने तईं मन में ह्र अधिक समझता है!" ये बातें पुतली से सुन राजा उस दिन योंहीं अपता पपता रहगया, वुह साअ़त भी जाती रही, सुबह़ को दूसरे दिन राजा सिंहासन के पास आ खड़ा ऊआ, और पुतली से पूछने लगा कि "ह्र ख़ुश तो है, कथा सुने से मुझे निहायत ख़ुशी होती है, और जो सुनता है मह़ज़ूज़ होता है," तब

* मधमावती नवीं पुतली बोली *

"सुन राजा भोज! यहां बैठकर मैं एक दिन की कथा राजा बीर बिक्रमाजीत की कहती ह्रं. एक रोज़ राजा ने होम का आरंभ किया, जहां तक देस के बिराह्मन थे उन को नौता भेज बुलवाया, और जितने उस के देस के राजा और साह्रकार थे वे भी ह़ाज़िर ऊए; भाट, भिखारी, भिचुक, सुनकर सब धाये. देस२ के राजा, अपने सब लोगों को ले२ आये, और जितने देवता थे वे भी सब के सब आये. राजा अपने सिंहासन पर बैठा, यज्ञ होने लगा, कि एक बूढ़ा बिराह्मन उस समैं आया. राजा अपने यज्ञ के मंच पढ़ता था, बिराह्मन को दूर से देख मन में दंडवत की; उस पंडित ने आगम बिद्या से मअ़लूम किया, हाथ बढ़ा राजा को आसीस दी कि, "चिरंजीव हो!"[33] जब राजा ने मंच से फ़ुर्सत पाई तब उस बिराह्मन से कहा कि, "महाराज! आप ने बऊत मंद काम किया, कि बिना प्रनाम आशीर्बाद तुम ने दिया, जब लग पांव न लगे कोई,[34]

तो वुह आसीस आप सम होई." बिराह्मन ने कहा, "राजा! जब तूने मन में दंडवत की, तब मैं ने आसीस दी" * यह बात सुन राजा ने लाख रुपये बिराह्मन को दिये; बिराह्मन कहने लगा, "महाराज! इतने रुपयों में मेरा निर्वाह न होवेगा; ऐसा कुछ बिचार कर दीजिये, जिस में मेरा काम होवे." राजा ने पांच लाख रुपये उसे दिये, वुह लेकर अपने घर को गया, और जो२ बिराह्मन उस यज्ञ में थे, उन को भी बहुत कुछ दिया. इस वास्ते राजा भोज! मैं ने तेरे आगे यह बात कही कि तू सिंहासन के बैठने जोग नहीं; सिंह की बराबरी सियार नहीं कर सकता, और हंस की बराबरी कौवे से नहीं होती, और बंदर के गले में मोती की माला नहीं सोहती, और गधे पर पाखर नहीं फबती, मेरा कहा मान, और इस ख़ियाल से दूर गुज़र, नहीं तो नाहक़ किसी दिन तेरा प्राण जायगा" * यह सुन कर राजा चुप रहा, और दिन भी गुज़र गया, जब रात हुई, अंदेश: कर सुबह को बदस्तूर सिंहासन के पास आया, और चाहे कि पांव धरे तब

* प्रेमावती दसवीं पुतली *

हंस के बोली, "राजा! पहिले तुम मुझ से यह बात सुन लो, पीछे इस सिंहासन पर बैठो," राजा बोला, 'तू कथा कह, मेरा भी जी सुने को चाहता है,' राजा वहां आसन बिछवा बैठा, और पुतली कहने लगी. "सुन राजा! एक दिन बसन्त ऋतु में, टेसू फूला

हुआ था * मौर मौरिया हुआ, कोयल कूक रही थी, ठंढी हवा चल रही. राजा बिक्रमाजीत अपने बाग़ में बैठा हुआ हिंडोल सुनता था, इस में एक बियोगी किसी देस से भूला भटका आ निकला * राजा के पांव पर गिर पड़ा, और कहने लगा, "स्वामी! मैं ने बहुत दुख पाया है, और अब मैं आप की सरन आया हूं," और उसकी यह सूरत बनगई थी कि तमाम लहू बदन का सूख गया था, और आंख से कम सूझता था; अन्न, पानी सब छोड़ दिया था, किसी तरह धीरज नहीं धरता था. राजा जों२ समझाता था तों२ वुह बिरह से व्याकुल हो२ रोता था, तब राजा ने कहा, "तुम अपने जी को संभालो, और इतने दुखी क्यों हो? और अब जो यहां आये हो तो आप को तसल्ली दो; किस कारण तुम्हारी ऐसी गत हुई है, और किस के ग़म से तुम्हारी यह शकल बनगई है मुद्दआ अपना कहो, किस देस से आये हो, और क्या तुम्हारा नाम है?" * वुह एक आहि सर्द दिल पुर दर्द से खैंचकर बोला, "नगर कलंजर देस है मेरा, मैं मतिहीन निर्बुद्धी हूं; एक जती ने मेरे आगे यह बात कही थी कि एक ख़ूब सूरत स्त्री एक जगह है, वैसी सुन्दर कोई जग में नहीं, गोया कामदेव से पैदा हुई है, बल्कि तीनों लोक में वैसी न होगी, और लाखों राजा जी लगा उसके यहां आते हैं, और जल२ जाते हैं पर उसे नहीं पाते." राजा ने कहा, "किस लिये वे जलते हैं?" तब वुह यह हक़ीक़त कहने लगा कि, "उसके बाप ने वहां एक आग भड़काई है, और एक कड़ाह भर घी चढ़ा रक्खा है, वुह घी पड़ा खौलता है, और यह शर्त है उसकी जो उस कड़ाह

में अश्नान कर जीता बच निकले उस्से कन्या की शादी करूंगा * यह बात उस जोगी से सुन कर मैं भी वहां गया था, सो मैं ने अपनी आंखों से यह तमाशः देख हैरान हुआ, और वहां हज़ारों राजे देस२ के लाखों नौकर चाकर साथ लेकर आते हैं, यह देख पछता कर जाते हैं, उन में से जो इरादः करता है, कड़ाह में गिर कर जल भुन जाता है * जब से शकल उस राज कन्या की नज़र आई है, सुध बुध, मैं ने गंवा अपनी हालत यह उस के इश्क़ में बनाई है." यह बात सुन कर राजा ने कहा, "आज तुम यहां रहो कल हम तुम मिलकर वहां चलेंगे, और उसे तुम्हें दिला देंगे, अपनी ख़ातिर जमअ् रक्खो" * यह बात कह उसे अश्नान करवा, कुछ खिलवा, अपनी सभा में बिठला यह हुकम किया कि, "जितने संगीत बिद्या-वाले हैं सब तैयार होर आज यहां आकर हाज़िर होवें और अपना२ मुजरा बजालावें." राजा की आज्ञा पा आन हाज़िर हुए, और अपना२ गुन ज़ाहिर करने लगे * राजा ने उससे कहा कि, "इन में से जिस पातुर को तुम चाहो, हम तुम्हें दें, तुम यहां बैठ कर सुख भोग करो, और उसका खियाल दिल से भुला दो." सुनकर वुह बियोगी बोला, "महाराज! सिंह अगर सात दिन उपास करे, तो भी घास न चरे, सिवाय उसके मुझे किसी और की इच्छा नहीं" * इसी तरह तमाम रात बीती, जब तड़का हुआ, तब राजा ने अश्नान, पूजा कर उन बीरों को याद किया, वे तुर्त आन हाज़िर हुए और अर्ज़ की, "महाराज! क्या हुकम है, हम किस देस को तुम्हे ले चलें?" * राजा बोला, "जहां यह प्रेमी कहे" * उसे

कहा, "राज कन्या के नगर में ले चलो, जिस जगह वुह घी का कड़ाह खौल रहा है, और सारा आलम वहां जमअ है उसी देस को लेचलो" * राजा ने तख़्त पर उस को भी बिठला आगिया कोयला दोनों बीरों को हुकम किया कि, "उसी देस में लेचलो" * बीर सुनते ही ले उड़े, और एक दम में सिंहासन उसी शहर में जाकर रख दिया * राजा ने वहां जाकर देखा बाजन बाज रहे हैं, और मंगलाचार हो रहा है. वुह राज कन्या हाथ में फूलों की माला लिये फिरती है, और राज पुत्र वहां उसके लिये कामना करके जो गये हैं सो सब वहां खड़े हैं; लेकिन हियाव किसी का यह नहीं पड़ता, जो उस कड़ाह में कूदे, और जो कोई जान पर खेलकर कूदता है तो जल भुन जाता है * राजा ने जब उस कन्या के पास जाकर देखा उस के रूप को देख मोहित हो रहा, और कहा जिस कोख से यह कन्या पैदा हुई है धन्य है! उस कोख को आदमी की तो क्या जान है, उसे देवता देखें तो बेसुध हो जावें * इतनी बात राजा ने कहकर, बीरों को कहा कि, "हम इस कड़ाह में कूदते हैं, तुम खबरदार रहना" * बीर बोले, "महाराज! निचिंताई से कूदिये, और किसी बात का खौफ़ न कीजिये." इतनी बात कह राजा कड़ाह के पास जा झंड़ाक से कूद पड़ा, कूदते ही जल भुन राख होगया. बैताल ने देखा, और तुर्त अमृत ले आया, और राजा के ऊपर डाला, पड़ते ही उसके राजा रामर कर खड़ा होगया, और जितने बिराह्मन वहां थे जैर करने लगे * वुह जो राज कन्या थी, उसने आते ही फूलों का हार

गले में राजा के डाल दिया. वुह जो माल जब उसने राजा को पहना दी तब सब लोग अचंभे में रहगये, कि यह राजा कोई अजब तरह का आया, जो जल गया और फिर जी उठा! यह काम मनुष्य का नहीं है, कोई देवता है, जिस ने ऐसा काम किया. राजा की नीयत पूरी ज़ई. . तब उस कन्या से ब्याह की तैयारी ज़ई. राजा के मुलक के जितने लोग थे सब ख़ुश ज़ए, और मंदिर में भी रानियां मंगलाचार करने लगीं. इस तरह राजा से शादी करदी जहेज़ में जवाहिर, जोड़े, घोड़े, हाथी, पालकी और तमाम माल असबाब कई कड़ोड़ का दिया. यह देकर आधा राज संकल्प कर दिया, और दासी दास भी बज़त से दिये; तब यह बिरही जो इस के साथ था देख२ बज़त ख़ुश ज़आ * जब ये सब दे ले चुके, राजा ने बिदा मांगीऽ उस राजा ने सब असबाब और माल उस ब्याही ज़ई दुलहन समेत साथ उसके कर रुख़सत किया, और कहा, "अपने देस को तुम जाओ, हम पर दया मया रखियो," वुह बोला "हमारा मुंह इस लायक़ नहीं कि तुम्हारी कुछ तअरीफ़ करें, जैसा साहस तुम ने किया ऐसा न हमने आखों देखा न कानों सुना, इस कलजुग में तुम कोई औतार हो, एक ज़बान से हम कहां तलक तुम्हारी सिफ़त कर सकें! एक सिर है हमारा हम तुम्हें क्या चढ़ावें, तुम्हारे पराक्रम पर कड़ोड़ों सिर सदक़े हैं, जो नीयत हम ने की थी सो तुम ने पूरी की, इसका भरोसा हमें न था कि यह इरादः हमारा पूरा होगा" * राजकन्या हाथ जोड़ कर राजा से कहने लगी, "महाराज! मेरा यह महा दुख तुम ने छुड़ाया, नहीं तो मेरे बाप ने ऐसा पाप किया

था, कि आप तो नरक भोग करता और मैं उमर भर अन व्याही रहती" * इतनी बात कह प्रेमावती पुतली बोली "सुन राजा भोज! ऐसा पराक्रम करके उस कन्या को राजा लाया, और उस बिरही को उसे देते बार न लाया, राजकन्या और सब माल असबाब देकर खाली हाथों अपने मंदिर में आ दाखिल ऊआ; और तू विद्यार्थी है, ऐसा साहस तुझ से न होसकेगा." यह सुन कर राजा ने हैरान हो सिर नीचे कर लिया. वुह साअत भी गई गुज़री, फिर दूसरे दिन राजा जब सिंहासन के पास गया और चाहे कि बैठे तब

* परमावती ग्यारहवीं पुतली *

हंसकर बोली, "राजा! पहिले मुझ से कथा सुन ले पीछे सिंहासन पर पांव दे. फिर कहने लगी, एक दिन राजा बीर बिक्रमाजीत उज्जेन नगरी को गया, और अपने सब आदमियों को बिदा कर आप वहां रात को रहा. सोता था कि उत्तर दिशा की ओर से एक रंडी धाय मार उठी, और पुकार२ कहने लगी, "कोई ऐसा है कि मेरी आकर खबर ले इस पापी से मुझे बचावे, और जी दान दे;" दम में मरी२ पुकारती थी, और दम में चुप होती थी * उसकी आवाज़ सुन कर राजा चौंक पड़ा, ढाल तलवार ले अंधेरी रात में उधर अकेला उठ चला, किसी को खबर न ऊई, जब बन में राजा पैठा, वुह सुन्दरी फिर रो२ पुकार उठी, कि राजा वहीं आ पऊंचा. देखा कि वहां एक देव उस स्त्री से रति मांगता

है, और वुह नहीं मानती, तब सिर के बाल पकड़२ कर ज़मीन पर दे२ पटकता है * राजा ने कहा, "ऐ पापी! तू त्रिया को क्यों मारता है? नरक से भी नहीं डरता." राजा की बात सुनकर फिर वुह उसे मारने लगा. राजा ने कहा, "तू इसे छोड़ दे, नहीं तो मैं तुझे मारता हूं." यह सुनकर वुह राजा के सनमुख होगया, गुस्से से शोर कर बोला, "या तो तू भाग या मैं तुझे खा जाता हूं, और तू कौन है जो यहां आया?" तब राजा ने ग़ज़ब में आकर एक तलवार ऐसी मारी कि सिर उसका धड़ से जुदा होगया, रुंड मुंड से दो बीर निकले, राजा के दोनों हाथों से लिपट गये. राजा ने छल बल कर उन में से एक को मारा, दूसरा रैन भर लड़ता रहा, भोर होते भाग गया. दैत्य जब भाग गया तब उस रंडी से राजा ने कहा, "अब तू जल्द मेरे साथ चल, और कुछ जी में अंदेश: न कर, वुह राचस मेरे डर से भागा, फिर न आवेगा." तब वुह सुन्दरी बोली कि, "सुनो भूपाल! जो मैं सात दीप, नौ खंड पृथिवी में जहां२ भाग कर छिप रहूंगी, पर उस्से बचने न पाऊंगी, वुह आकर ले जायगा, उसके बिन मरे मेरी ज़िंदगी न होगी, उसके पास एक मोहनी पुतली है, वुह उसके पेट में रहती है, जहां मैं छिपूंगी, उसके बल से वुह ढूंढ२ निकालेगा, और उस पुतली में यह ताक़त है, कि एक देव मरने से चार देव बना सकती है, यह बात उसकी सुनकर राजा उसी बन में छिप रहा, रात होते वुह देव आया, उस औरत से फिर ख़्वाहिश करने लगा जब उसने न माना बाल सिर के पकड़ ज़मीन पर पटकने लगा, वुह तोब: धाड़ करने

लगी, उसकी आवाज़ सुनते ही राजा निकल आया, और लड़ने को तैयार हुआ, देव भी रंडी को छोड़ राजा के साम्हने हुआ, चाहे कि राजा को मारे, इतने में राजा ने ऐसा एक खांडा मारा कि धड़ से सिर अलग होगया. उस धड़ से वही मोहनी निकल आई अमृत लेने चली, राजा ने दोनो वीरों को आज्ञा की, "यह जाने न पावे," वीर दौड़ कर उसकी चोटी पकड़ खैंच लाये, और राजा के साम्हने हाज़िर किया * राजा ने उस्से पूछा कि, "तू चंपा बरनी, मृग नैनी, गज गमिनी, कटि केहरी, चंदमुखी, नख सिख से ऐसी कि हंसी से तेरे फूल झड़ते हैं, और तेरी सुगंध से भौंरे मंडलाते हैं, बतला कि तू देव के पेट में क्यों कर रही थी?" * तब वुह बोली, "सुन राजा! पहिले मैं शिवगन थी, एक आज्ञा शिव की मैं चूक गई, तिस से उन्हों ने श्राप दिया, मैं मोहनी रूप होगई, और इस दैत्य ने महादेव की बहुत तपस्या की, तब सदा शिव ने मेरे तईं इस को बख्श दिया, फिर इस पापी ने मुझे लेकर अपने पेट में डाल रक्खा, तब से मैं मोहनी कहलाई, पर शिव की आज्ञा थी कि इस की सेवा कीजियो, और जो यह कहे सो मानियो, यों इसके बस हो कर मैं रहती थी, मेरा माजरा था जो मैं ने तुम से कहा, अब यह बैताल मुझे क़ाबू कर तुम्हारे पास लाया है, और आदमी की इतनी क़ुदरत नहीं थी, बल्कि जो तुम भी बहुतेरा उपाय करते, तो भी तुम्हारे हाथ न आती, अब. राजा मैं तुम्हारे बस में हूं" * राजा बोला, "अब तू क्या करेगी?" तब वुह बोली, "तू राजा है, और मैं मोहनी हूं, तेरे पास रहूंगी, ज्यों महादेव के पास पार्वती." यह कह कर बचन

दिया. एक वुह मोहनी, और दूसरी वुह रंडी जिसे देव से छुड़ाया था राजा के साथ ऊई. ये बातें कर परमावती पुतली बोली, "सुन राजा भोज! उस मोहनी से राजा बिक्रमाजीत ने गंधर्ब ब्याह किया, और जो कुछ आगे राजा के पराक्रम हैं मैं कहती ऊं तू सुन कान देकर * वुह रंडी दैयत से जो ली थी, उसे राजा ने यों कहा सुन सुन्दरी! मैं तुझ से पूछता ऊं, देव ने तुझे कहां पाया था, कौन दीप, और नगर है तेरा, और कौन बाप है तेरा? नाम ले उसका. अपना सब ब्योरा मुझ से कह, और सब बातें तुर्त बता, देर मत कर. सुन कर तेरी अवस्था जैसा तू कहेगी वैसाही मैं बिचार करूंगा * वुह नारी बोली, "महाराज! मेरी कथा सुनो कि क़िसमत का लिखा मिटता नहीं है, और जो कुछबिधाता ने कपाल में लिख दिया है, वुह इनसान को भुगतना होता है. एक ब्रिह्मापुरी है समुद्र के पास, जिसे संकल दीप कहते हैं, बिराह्मन की मैं बेटी ऊं, एक दिन सखियों के संग तालाब पर अश्नान करने गई थी, और वुह तालाब ऐसा था कि घने२ दरख़्तों से सूरज वहां नज़र न आता था, वहां सखियों के साथ अश्नान पूजा करके घर को आती थी, कि साम्हने यह राक्षस नज़र आया, और रति मांगने लगा * जों२ मैं न मानती थी, तों२ मुझे दुख देता था और मैं अन ब्याही अपना धर्म क्योंकर गंवाती, कितने दिनों से मुझे सताता था, और नरक पड़ने से डरता न था, राजा तू ने मेरा धर्म रक्खा, और मेरे कुल की लाज रक्खी, तुझे संसार में जस होगा, जैसा तू ने उपकार किया, वैसा ही मुझ से आसीस ले, हज़ार बरस तक जीता रह, और

किसी के बस न पड़, दिन ब दिन सत और तेज बढ़े, साहस तेरा ऐसा हो कि कोई न जीते * इतनी आसीस जब वुह दे चुकी, तब उसे बेटी कह राजा ने अपने पास तख़्त पर बिठा लिया, और मोहनी को भी उठा बैतालों को हुकम किया कि "हमारे नगर को ले चलो," बैताल वोंहीं ले उड़े, पलक मारते महल में ला दाखिल किया, राजा ने आते ही दीवान को याद किया, वुह मंत्री आकर हाज़िर हुआ कहा, "कोई पंडित सज्ञानी बिराह्मन ढूंढकर जल्दी ले आओ" * प्रधान ने आज्ञा पाय, नगर२ बिराह्मनों को भेज एक बिराह्मन सुन्दर बिद्वान को बुलवाया, मार्कंडेय नाम वुह बिराह्मन जब आया, प्रधान राजा पास ले गया, राजा ने हाथ जोड़कर कहा, "एक बिराह्मन की कन्या हमारे यहां है, उसे हम तुम को दिया चाहते हैं, तुम भी यह बात क़बूल करो" * बिराह्मन बोला, "राजा! वुह कन्या हम को दो, जग में तुम जस, धर्म बड़ाई लो," राजा ने यह बात सुनते ही बिराह्मन को तिलक दे ब्याह का सामान कर दान दहेज़ तैयार किया, फिर बिराह्मन को बुला संकल्प कर कन्या दान कर दिया * इतनी बात कहकर पुतली समझाने लगी, सुन राजा! बीर बिक्रमाजीत ने सोच कुछ न किया, और लाखों रुपयों का दान दहेज़ दे एक पल में बिराह्मन के हवाले किया, तू इस लायक़ नहीं है, इस सिंहासन पर बैठने से डर. अय राजा भोज! तू गुन गाहक है, दानी और साहसी नहीं तू नाहक़ हिर्स करता है." यह सुनकर राजा चुप हो रह गया और सुबह होते ही, फिर सिंहासन पर पैठने को तैयार हुआ *

* कीर्तवती बारहवीं पुतली *

बोली, "सुन राजा भोज! एक दिन राजा बीर बिक्रमाजीत अपनी मजलिस में बैठकर कहने लगा, कि कलियुग में और भी कहीं कोई दाता है? यह सुनते ही एक बिराह्मन बोला, सुन राजा! प्रजा के हितकारी, तेरे बराबर तो साहसी और दानी कोई नहीं, पर एक बात मैं कहा चाहता हूं, शर्म से कह नहीं सकता * राजा ने कहा सत्य बात में लाज काहे की है? तुम हमारे आगे साफ़ कहो हम उस बात में बुरा न मानेंगे. वुह बिराह्मन बोला एक राजा समुद्र किनारे रहता है, और सदा धर्म काज करता है, जब वुह सवेरे अश्नान किया चाहता है, तब लाख रुपये दान देता है, और जल पीता है. । यह तो एक मैं ने उस के दान की रीत कही, और भी बहुत कुछ दान करता है, और ऐसा राजा धर्मात्मा हम ने सिवाय उस के दूसरा नहीं देखा * यह बात सुन कर राजा के जी में इच्छा हुई कि उस राजा को चलकर देखिये. यों अपने जी में बिचार कर बैतालों को बुला, तख़्त पर सवार हो, समुद्र के किनारे चला और जब उस के नगर के पास पहुंचा, तब सिंहासन से उतर बैतालों से कहा, अब तुम देस को जाओ, और हम इस राजा की सेवा करने पर तैयार हुए, तुम वहां से हमारी ख़बर लेते रहियो * तब बैताल बोला, उस का बिचार क्या है? राजा ने कहा, तुम्हें इस बात से क्या काम? जो हम तुम्हें कहते हैं सो करो : यह बात सुन कर बैताल अपने नगर को धाये, और राजा पाओं २

शहर में दाखिल हुआ, जब फिरता हुआ नगर में राजा के द्वारे आ पहुंचा, द्वारपालों से कहा कि अपने स्वामी को समाचार दो, कि कोई विदेशी तुम्हारे द्वारे सेवा करने के लिये खड़ा है; इस की बात डिउढ़ीदारों ने सुनकर जा राजा से अर्ज़ की * राजा सुनते ही हंसता हुआ आप ही बाहर निकल आया. विक्रम ने जुहार की, राजा ने सलाम लेकर पूछा क्षेम कुशल से हो, तब वुह बोला आप की दया से. फिर राजा ने कहा तुम किस देस से आये हो, तुम्हारा नाम क्या है, और तुम्हारा अर्थ क्या है? सब सुनाओ वह बोला सुनो महाराज! मेरा नाम विक्रम है, राजा विक्रम के देस का मैं रहनेवाला हूं, कुछ बैराग मेरे जी में हुआ, इस से मैं आप के दरसन को आया हूं, आप का दरसन मैं ने किया, सब मेरा सोच बिचार गया * राजा बोला, तुम्हें हम क्या रोज़ कर दें, और कितने में तुम्हारा निर्बाह होगा? तब इन ने कहा चार हज़ार रुपये में मेरी गुज़रान होगी. यह सुन कर राजा ने कहा ऐसा क्या काम करते हो, जो चार हज़ार रुपये रोज़ीनः हम तुम्हें दें? वुह काम हम से कहो, कि हम यह करेंगे. फिर विक्रम बोला, जिस राजा के पास मैं रहता हूं उसकी गाढ़ी भीड़ में काम आता हूं * इस तरह से चार हज़ार रुपये रोज़ लेकर राजा वहां रहने लगा, यह बात पुतली ने समझा राजा भोज से कही, जब इस तरह से नौ दस दिन गुज़रे तब राजा बिक्रमाजीत ने अपने मन में बिचारा, कि जो लाख रुपये रोज़ दान करता है, उस का नित नेम क्या है, इसे मअ़लूम किया चाहिये, किस देवता का इसे बल है. इसी सोच में रहने

लगा, एक दिन देखता क्या है, दो पहर रात के समैं राजा अकेला बन को जाता है यह देखते ही उसके पीछे हो लिया, आगे२ राजा पीछे२ बिक्रमाजीत. इस तरीक़ शहर से बाहर निकल, एक बन में पहुंचे, वहां जाकर देखा तो एक देवी का मंदिर है, उस मंदिर के बाहर कड़ाह चढ़ा है, और उस में बिरछ्ल की आग से घी औटता है * वुह राजा तालाब में स्नान कर के देवी का दरसन कर उस कड़ाह में कूद पड़ा, और पड़ते ही भुन गया, वोंहीं चौंसठ योगिनियां आन के राजा के उस तले हुए, बदन को नोच कर खागईं; इतने में कंकालिन अमृत ले आई, और उस के हाड़ पंजर पर छिड़का, वुह राम२ कर के उठ खड़ा हुआ, तब देवी ने मंदिर से लाख रुपये दिये, और वुह लेकर अपने घर को आया, तब योगिनियां अपने धाम को गईं * यह तमाशः देखकर राजा बिक्रमाजीत भी उसी कड़ाह में कूद पड़ा, और उसी तरह जल गया: फिर तुर्त योगिनियां दौड़ीं; और उसको भी खा गईं * उसी तरह कंकालिन ने अमृत ला इस पर भी छिड़क जिला दिया. मंदिर में से लाख रुपये उसे भी देवी ने दिये, रुपये ले दुबारः फिर वुह कड़ाह में गिरा; योगिनियां फिर जला भुना गोश्त बदन का नोच कर खा गईं, और कंकालिन ने अमृत छिड़क जिला दिया. फिर देवी ने दो लाख रुपये दिये * ग़रज़ वुह इसी तौर सात बेर गिरा और लाख रुपये हर मरतबे में सिवाय पाये, जब आठवीं दफ़ अ इरादः गिरने का किया तब देवी ने आन के उस का कर धरा, और कहा मांग जो तुझे चाहिये, हाथ जोड़ कर बोला मैं मांगूं जो मांगा

पाऊं. देवी ने कहा जो तेरी इच्छा में आवे मांग, वही मैं तुझे दूंगी * राजा ने कहा देवी! जिस थैली में से तुम ने रुपये दिये हैं वुह थैली मुझे कृपा कर दीजिये. यह सुनते ही उस्ने वुह थैली दी, यह खुश हो उसी राजा के स्थान पर गया और उसके दूसरे दिन रात को फिर वुह राजा बन में गया, और वहां उसने देखा कि, न देवी का मंदिर है, न कड़ाह है स्थान भंग पड़ा है * यह दशा वहां की देख, सोच में डूब गया, फिर जो होश आया तो धाय मार के रोने लगा आखिर को लाचार हो उलटा फिर अपने मंदिर में आ उदास हो सो रहा. भोर हुए जब सभा के लोग आये, राजा को देखा कि निढाल पड़ा है, न हंसता है, न किसी से बोलता है, बल्कि जो कोई राज काज की बात करता है सुन कर मुंह फेर लेता है, यह हालत राजा की देख दीवान ने बिनती कर कहा, महाराज! आप के मन मलीन होने से सारी सभा उदास हो रही है. राजा ने यह जवाब दिया, तुम बैठकर दरबार करो; मेरा शरीर मांदा है * तब प्रधान बैठ राज काज की बातें करने लगा, और जो कोई आता था, अपने मन में जो चाहता था बिचारता था, कोई कहता था, कि राजा बीमार है, कोई कहता कि राजा को कोई मोह गया, और कोई कहता था कि राजा है नहीं, पर राजा की अवस्था किसी पर मअलूम न थी * इतने में अपने समैं पर राजा बीर बिक्रमाजीत भी गया और पूछा कि तुम्हारे मन में क्या दुख है? क्योंकि मैं ने तुम से प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारी मुश्किल में काम आऊंगा, सो मेरा बचन क्या आप भूल गये, मेरे आगे अपनी सब अवस्था

ब्योरेवार कहिये. तब राजा बोला कि मैं तेरे आगे क्या अपनी बात कहूं, पर एक मेरे जी में है प्रान घात करूंगा * विक्रम ने कहा पृथीनाथ, एक बेर मेरे आगे अपने मन की बिथा कहिये, तब पीछे और जतन कीजियेगा. राजा ने कहा, एक देवी मेरे पास थी सो मैं नहीं जानता वुह कहां गई, लाख रुपये रोज़ वुह मुझे देती थी, वे लाख रुपये मैं नित दान करता था, और अब मुझे बड़ा कष्ट हुआ है, मेरी नित्य क्रिया निभेगी नहीं, इस वास्ते मैं जान दूंगा, और ऐसा मैं किसी को नहीं देखता जिस्से मेरा नित्य नेम चले, और जो धर्म पुन्य न रहेगा तो मेरा जीना संसार में अकारथ है * यह बात उसकी विक्रम ने सुनते ही वुह थैली हाथ दी और कहा महाराज! अब असनान ध्यान कर नित्य धर्म कीजिये और थैली से जितने रुपये चाहोगे ख़र्च करोगे कम कभी न होंगे वुह सुनते ही ख़ुश होकर उठ बैठा और थैली हाथ से ले, अपने प्रधान को बुला उस में से रुपये निकाल ख़र्च को दिये और कहा जितने ब्राह्मन सदा दान पाते हैं उन को उसी तरह से दो, दीवान मुवाफ़िक़ हुकम के अपने काम में मशग़ूल हुआ. राजा बीर बिक्रमाजीत ने कहा महाराज! मुझे आज्ञा दीजिये तो मैं अपने देस को जाऊं बहुत दिन गुज़रे हैं. तब वुह राजा बोला हम तुम्हारे कहां तक गुन मानेंगे तुम ने हमें जी दान दिया है फिर कहा जो तुम अपने देस पहुंचो, संदेसा हमें भेज देना, कि हम खेम कुशल से पहुंचे और ठीक अपना ठिकाना बताजाओ. जो हमारा पत्र तुम्हारे पास पहुंचे तब उस ने कहा मैं राजा बिक्रमाजीत हूं और अंबावती नगरी

का राज करता हूं तुम्हारा नाम और जस सुनकर दरसन के लिये आया था सो तुम्हें देखा और मेरा चित प्रसन्न हुआ तुम अच्छी तरह राज करो और हमें बिदा दो; तुम्हारा साहस, बल, धर्म, हम ने देखा * यह सुनते ही वुह राजा उसके पांओं पर गिरपड़ा और हाथ जोड़ कर कहने लगा, बड़ा अपराध हुआ, और मैं ने तुम्हारा मर्म न जाना, तुम ने मेरी सेवा की सो तुम अपने जी में कुछ न लाना, और जैसा धर्म मैं ने आप का सुना था वैसाही देखा और धन्य है तुम्हारे तईं, और राजा! तुम्हारे धर्म साहस और पराक्रम को. यह कह राजा को तिलक दे बिदा किया राजा बीरों को बुला सवार हो अपने नगर में आया * इतनी बात कीर्त्तवती पुतली कहकर राजा को समझा ने लगी सुन राजा भोज! राजा बीर बिक्रमाजीत का साहस ऐसी बस्तु पाय कर देते कुछ बिलंब न लाया, और अपने जी में न पछताया, और जैसा साहस राजा ने किया; वैसा सुर, नर, कोई नहीं करता, और तू किस गिनती में है?" * यह सुन राजा भोज चुप हो रहा, पुनि दूसरे दिन के प्रभात समैं राजा उठ तैयार हो पाट बैठने को गया, मन में इरादः बैठने का करता था; फिर झिझक कर रह जाता था, इतने में

* चिलोचनी तेरहवीं पुतली *

बोल उठी, "सुन राजा! एक पुरातन कथा मैं तुझे सुनाऊं इस सिंहासन पर वही चढ़ेगा जो बिक्रम के सम पराक्रम करेगा," तब

राजा ने "कहा कह सुन्दरी! बिक्रम का बल, और कथा मुझे को मेरा भी मन चाहता है" * पुतली बोली "सुन राजा! कान देके. एक दिन राजा बीर बिक्रमाजीत शिकार खेलने को चला, और साथ में जितने मुसाहिब, राजपूत बली थे वे भी सज सजा कर तैयार हो आये, और एक२ की सवारी में हज़ार२ कोस के धावे का तुरंग था, राजा अपने घोड़े पर सवार था, और वुह गोया छलावा था, राज कुमार अपने२ शिकारी जानवर बाज़, बहरी, जुर्रा, शाहीन, कुही, लगड़, मंगवा२ अपने२ हाथों पर ले२ साथ हुए, और राजा ने भी एक बाज़ अपने हाथ पर बिठा लिया, मीर शिकारों को हुकम पहुंचा कि जिस२ के पास जो२ शिकारी जानवर तैयार हों, लेकर रिकाब में हाज़िर होवे. इस तरह बन ठनके एक बनकी राह ली, और वहां जाकर किसी ने बाज़, और किसी ने बहरी, किसी ने कुही, किसी ने शाहीन उड़ाई, और अपने२ जानवरों के पीछे घोड़े उठाये, और उधर राजा ने भी जितने मीरशिकार थे उन्हें हुकम किया कि इस जंगल में सब शिकार करो, मैं तमाशा देखूंगा, जो शिकार करलावेगा वुह इनआम पावेगा, और जो शिकार न कर-लावेगा वुह नौकरी से दूर होवेगा * यह बात सुनते ही जितने मीरशिकार थे, उन सभों ने उस बन में चारों तरफ़ जानवर छोड़े, और उधर हुकम बहेलियों को किया कि तुम भी शिकार करो, इसी तरह सब शिकार करते थे, और ला२ के राजा के नज़र गुज़रानते थे, वुह खड़ा तमाशा देख रहा था, फिर उसने एक परंद पर बाज़ उड़ाया, और आप उस के पीछे लगा, जिधर२ वुह बाज़

आता था राजा भी पीछा किये आता था. इस में कोसों निकल गया, देखे तो शाम होगई, तब सुर्त आई, और फिरकर पीछे देखा तो वहां कोई आदमी नज़र न आया, और यहां तमाम फ़ौज राजा की शाम हुए पर राजा को ढूंढ शिकार लेले आन कर नगर में दाखिल हुई, और वहां सूने जंगल में राजा भटकता फिरता था, और कहीं राह न पाता था, जब अंधेरा हो गया, और रात बहुत गई, एक नदी के किनारे पर पहुंचा, उतर कर अपने हाथ ज़ीन पोश बिछा, घोड़े को एक झुंडी से बांध बैठ रहा, फिर देखता क्या है, कि वुह नदी बढ़ती आती है, यह हटने लगा * ग़रज़ ज्यों२ राजा हटता जाता था, त्यों२ वुह बढ़ती आती थी, फिर जो निगाह की तो क्या देखा कि नदी की धार में एक मुर्दः बहा चला आता है, और उस के साथ२ एक बैताल और एक जोगी खैंचा खैंची किये हुए आते हैं, और आपुस में यों झगड़ते हैं, कि जोगी बैताल से कहता है, तू ने बहुत से मुर्दे खाये हैं, और यह मैं ने अपने अवसर पर पाया है, तू छोड़ दे, मैं इसे लेजाकर अपना जोग कमाऊंगा, यह सिद्धि मैं ने तुझ से पाई. बैताल बोला, भाई! मैं अयाना नहीं हूं, जो तू मुझे फुसलावे, क्योंकर अपना आधार मैं तुझे दूं. इसी तरह आपुस में दोनों झगड़ते थे, और कहते थे, कोई तीसरा शख़्स इस वक़्त ऐसा नहीं, कि हमारा न्याव चुकावे. फिर जोगी कहने लगा कि बैताल! तू मेरी बात सुन, कल प्रभात को हम तुम सभा करें, जो सभा में न्याव चुके, वही तू भी प्रमान कर और मैं भी * इतने में एक दृष्टि राजा की ओर आ पड़ी, देख कर दोनों

हंसे, और कहने लगे, वुह कोई मनुष्य नदी किनारे में नज़र आता है, वहीं चलो कि वुह न्याव निबेड़े * यह कहकर मुर्दः लिये दोनों किनारे पर आये, राजा को तमाम क़िस्सः सुनाकर कहा कि स्वामी! तुम धर्मात्मा हो, धर्म बिचार के हमारा न्याव निबेड़ दीजिये, जोगी बोला कि महाराज! मैं कहता हूं सो आप ध्यान देकर सुनिये, इस बैताल ने बहुत मुर्दे खाये हैं, और यह मुर्दः मैं ने अपने दाव पर पाया है, यह नाहक़ मुझ से राड़ करता है, और कहता है, कि मैं तुझे न दूंगा, मैं इस से बिनती करके मांगता हूं, और कहता हूं, कि गोया यह मैं ने प्रसाद तुम से पाया, यह नहीं मानता * राजा ने बैताल से पूछा कि तू अपने भी मन की मुझ से बात कह. वुह बोला, महाराज! यह जोगी बड़ा मूर्ख है, जो इस ने मुझ से राह में झगड़ा लगाया, मैं हज़ार कोस से इस मुर्दे को ले आया हूं, यह मुझ से मांग रहा है, मैं इसे क्योंकर दूं कि इस मुर्दे के लिये मैं ने बहुत कष्ट किया; यह नाहक़ देख के मन चलाता है, मैं क्या कहूं कि जो२ मैं ने इस के वास्ते दुख उठाये अब अहार के समैं, इस दुष्ट ने आन सताया, इसका न्याव तेरे हाथ है, क्योंकि, तू धर्मात्मा राजा है, जो तू कहेगा, सो मुझे प्रमान है. तब राजा कहने लगा, तुम दोनों बड़े हो, प्रसाद हमें दो, कुछ तुम से हम मांगते हैं, तब तुम्हारा न्याव हम चुका देंगे. यह सुन जोगी ने हंसकर झोले में से एक बटुआ निकाल राजा के हाथ दे कर कहा, राजा तू जितना द्रव्य चाहेगा, उतना यह बटुआ देगा; इस में से कभी कम न होगा. पुनि बैताल ने कहा राजा! मैं एक मोहनी तिलक तुझे देता हूं, इसे जब तू

घिसकर टीका देगा, सब तुझ से दबेंगे, तेरे साम्हने कोई न होगा * ये दोनों ने प्रसाद राजा को दिया, उन ने कर जोड़ कर लिया, और बोला कि सुन बैताल! तू इस मुर्दे को छोड़ दे, मेरे घोड़े को खा, यह मुर्दः जोगी के हवाले कर दे, क्योंकि, तू भूखा न रहे, और उस का काम भी बंद न हो * यह सुनते ही बैताल उस घोड़े को चबा गया, और जोगी मुर्दः ले अपना मंत्र साधने गया. राजा ने बीरों को बुलाया और अपने देस को चला, रस्ते में एक भिखारी सनमुख से चला आता था, उसे चीन्हा कि साकेबंध राजा आता है, डरते२ उसने सुवाल किया, कि महाराज! आप के नगर में मैं बहुत दिनों रहा, लेकिन कुछ अर्थ मेरा सिद्ध न हुआ: अब मैं कुछ तुम से मांगता हूं, मेरे तईं दीजिये * यह सुनते ही राजा ने वुह बटुआ उसके हाथ दिया, और उसका भेद बताया, वुह आसीस देता अपने घर को गया, और राजा अपने मंदिर में आया * इतनी बात कह त्रिलोचनी पुतली कहने लगी कि सुन राजा भोज! ऐसा दानी, और ऐसा सहासी, जो होवे, सो इस सिंहासन पर बैठे, नहीं तो पातक होगा," उसके दूसरे दिन, राजा सबेरे उठ असनान, ध्यान कर दरबार में आन बैठा, और दीवान, मुतसद्दी को बुलाकर, कहा कि "आज मेरा चित बहुत प्रसन्न है, जल्दी चलके सिंहासन पर बैठूंगा." इतनी बात कह वहां से उठ, सिंहासन पास आ, सौ गौ दान कर, बिराह्मनों को बिरतें करदीं, फिर आप गनेश को मनाय सिंहासन पर बैठने को पांव बढ़ाया, इतने में *

* त्रिलोचनी चौदहवीं पुतली ने *

कहा, "पहिले कथा सुन जो मैं कहती हूं, पीछे सिंहासन पर बैठ," राजा ने सुनते ही पांव खैंच लिया, और सिंहासन के नीचे आसन बिछा बैठ गया, तब पुतली बोली, कि "राजा! सुन, एक दिन राजा बीरबिक्रमाजीत ने अपने प्रधान को बुलाकर कहा, कि मैं यज्ञ करूंगा, जिस से पुन्य हो, और आगे को निस्तार होवे; दीवान ने सुनते ही देस२ को नौता भेज, जहां तलक राजा प्रजा थे, उन्हें बुलाया * करनाटक, गुजरात, कश्मीर, क़नौज, तिलंगान, इन नगरों में भी नौता भेज जितने बिराह्मन थे उन्हें बुलाया, और सातों दीप में नौता भेजा, वहां के राजाओं को तलब किया, फिर एक बीर को पाताल के राजा के पास नौता भेज उसे बुलाया, और दूसरे बीर को स्वर्ग को रवानः कर देवताओं को नौता भेज बुलाया, और एक बिराह्मन को बुलाकर कहा कि तुम समुद्र को जाकर हमारी दंडवत कहो, और निवेदन करो, कि राजा ने यज्ञ आरंभ किया है, और आप को बहुत बिनती कर बुलाया है; वुह बिराह्मन तुर्त वहां से चला, और कितने एक दिनों में सागर के तीर जा पहुंचा, और वहां देखता क्या है, कि न कोई मनुष्य है, और न कोई वहां पशु, पंछी है, केवल जल ही जल नज़र आता है। यह देख बिराह्मन अपने जी में चिंताकर कहने लगा, कि राजा का संदेसा मैं किस्से कहूं, यहां तो कोई जीव दिखाई नहीं देता, और है तो केवल जल ही जल है. ऐसा बिचार कर अपने मन में वुह

पुकारा, 'राजा बीर बिक्रमाजीत का नौता मैं दिये जाता हूं, और तुम जल्दी पहुंचना' * इतना कह वहां से वुह जब चला तब रस्ते में एक बूढ़े बिराह्मन के रूप समुद्र नज़र आया, और उसे पूछा कि बीरबिक्रमाजीत ने हमें किस वास्ते बुलाया है? तब उसने कहा कि राजा के यहां यज्ञ है, और तुम्हें ज़रूर बुलाया है, तब समुद्र बोला कि मैं चलूंगा पर मेरे चलने से जल जो यहां से बढ़ेगा तो कई नगर डूब जायेंगे, मेरी तरफ़ से राजा को बिनती कर कहना, मेरे न आने का कुछ पछतावा न करना, मैं इस सबब से पहुंच नहीं सकता, तब समुद्र ने बिराह्मन को पांच लअ़ल दिये, और एक घोड़ा राजा को सौग़ात भेजा, आप वहीं रहा और बिराह्मन रुख़सत हो राजा के पास गया, वे पांचो रत्न राजा को दिये, और घोड़ा ला साम्हने खड़ा किया. फिर सब वहां का बिर्तांत कहा, तब राजा ने प्रसन्न हो बिराह्मन से कहा कि ये लअ़ल, और घोड़ा तुमही को मैं ने तुम्हें दिया" * यह कहकर पुतली ने राजा भोज को समझाया कि, "सुन राजा भोज! ऐसा पदारथ राजा बिक्रमाजीत ने देते बिलंब न किया, वे लअ़ल, और घोड़ा कई राज की क़ीमत के थे, ऐसे दानी राजा के आसन पर बैठने जोग तू नहीं, पंडित तू है, पर माया तुझ से छूटती नहीं." वुह दिन भी योंहीं गुज़र गया, दूसरे रोज़ फिर सिंहासन पर बैठने को तैयार हुआ तब *

* अनूपवती पंद्रवीं पुतली बोली *

"सुन राजा! बीरबिक्रमाजीत के गुन, कहने में नहीं आसकते, जो बात कहने जोग होवे तो कहिये, अयुक्त कहते ऊए जी सकाता है." राजा बोला, तू कह मेरा जी सुन्ने को चाहता है, जैसी बात ऊई वैसी कह, इस में तुझे दोष नहीं, "तब पुतली बोली," अच्छा अब मैं कहती हूं, तू कान देकर सुन * एक दिन राजा बीरबिक्रमाजीत सभा में बैठा था और कहीं से पंडित आया उसे आकर राजा के सनमुख एक श्लोक पढ़ा, सुन कर राजा मन में बऊत प्रसन्न ऊआ उस श्लोक का मुद्दआ यह था, मित्र द्रोही, और बिश्वास घाती, जो हैं सो नरक भोग करेंगे, जब तलक चांद और सूरज हैं * यह सुनकर राजा ने लाख रुपये उस बिराह्मन को दान दिये, और कहा कि इस का अर्थ मुझे समझा कर कह कि इस का बितांत क्या है? तब वुह बिराह्मन कहने लगा कि एक बड़ा प्रतापी राजा था, उसकी एक रानी जो थी, प्रान का आधार थी, पल भर भी वुह राजा उसे आप से जुदा न करता था, जब सभा में बैठता, तो साथही जांघ पर ले बैठता, और जब शिकार को जाता, दूसरे घोड़े पर बिठला साथ ले लेता * ग़रज़ जागना, सोना, खाना, पीना, एकही साथ था, पर ऐसा मूर्ख था, कि किसी से पतयाता न था रानी को निगाह में रखता. एक दिन उसके प्रधान ने औसर पाकर, हाथ जोड़े, और सिर निवा, कहने लगा कि स्वामी! जो मुझे जीदान दो, तो मैं एक निवेदन करूं, राजा ने कहा अच्छा:

तब वुह बोला कि महाराज! रानी के संग आप शोभा नहीं पाते, राज कुल की आन और मर्याद इस में रहती नहीं, देस२ के राजा हंसते हैं, और कहते हैं कि ऐसी सुन्दरी राजा के मन में बसी है कि पलक ओट भी नहीं करता * एक मेरी बात मानिये जो आप को यह बज़त प्यारी है एक चित्र पठ लिखवाइये और अपने पास रखिये इस में लोग निंदा न करेंगे * यह बात प्रधान की राजा के मन में भाई, कहा अच्छा, चित्रकार को बुलाओ * मंत्री ने उस को बुला भेजा, वुह तुर्त आकर हाज़िर ज़आ, और वुह मुसव्विर कैसा था, कि ज्योतिष विद्या में अति निपुन था, और चित्र कारी विद्या में भी पंडित था, उसे राजा ने कहा, कि रानी की मूर्त का पट लिख दे, जो मैं अपनी नज़रों में हमेशः रक्खूं. यह सुन कर उस सारद पुत्र ने मस्तक झुका के कहा, महाराज! अच्छा मैं लिख लाता ज़ं. राजा से रुख़सत हो अपने घर आया, लिखना आरंभ किया, कितने एक दिनों में लिख कर वुह चित्र तैयार किया, सो ऐसा कि जाने अभी इंद्र लोक से अपसरा उतरी है और उस रानी का जैसा अंग जहां था, तैसा ही उन ने अपनी विद्या के ज़ोर से लिखा, जब वुह तसवीर सरापा से तैयार ज़ई, लेकर राजा के पास गया, और राजा ने देखकर बज़त पसंद किया अंग२ उसने निरख२ देखा, नख से सिख तलक गोया सांचे की ढाली ज़ई थी, राजा की दृष्टि देखते२ दाहनी जांघ पर जा पड़ी, तो वहां एक तिल देखा, बज़त सा अपने जी में घबराया, और कहने लगा, कि उन ने रानी की जांघ का तिल क्यों कर देखा?

होय न होय, तो रानी से उस की मुलाक़ात है, इस तरह अपने मन में बिचार क्रोध कर दीवान से कहा, कि उस चित्रकार को तुर्त बुलाओ, उसे सुनतेही उसे बुला भेजा, जाना कि राजा खुश हुआ है कुछ इनआम देगा, जब वुह आनकर राजा के सनमुख हुआ, तब बधिक को बुला हुकम किया कि इस की गरदन मार के आंखें निकाल मेरे पास ले आ, जब वुह उसे मारने चला दीवान भी बिदा हो पीछे हो लिया, बाहर निकल जल्लाद से कहा, कि तू इसे मुझे दे, और आंखें हिरन की निकाल कर राजा के पास ले जा, जल्लाद ने प्रधान का कहना किया, और दीवान राजा की तरफ़ से बहुत बेइअतिबार हुआ, कि ऐसा मूर्ख राजा हम ने कहीं देखा, सुना नहीं है, कि गुनवंत पुरुष का यों जी मारे, कदाचित गुनवान पुरुष से कुछ तक़सीर हो जाय, तो उसे देस निकाला देते हैं, यह राजाओं का चलन हमेशे से है, पर कोई राजाओं की बात पर न भूले, मुंह में तो उन के अमृत रहता है, और पेट में बिष भरे हुए हैं, जो कहते कुछ हैं, और करते कुछ हैं * इस तरह दीवान ने अपने जी में बिचार कर डरते२ उसे छिपा रक्खा; और जल्लाद हिरन की आंखें निकाल राजा के पास लेगया कि महाराज! उस को मार कर आंखें निकाल आप के पास लाया हूं. राजा ने हुकम किया इन आंखों को संडास में लेजाकर डाल दो. इस तरह से वुह साअत तो यों टल गई कितने एक दिनों के बअद उस राजा का बेटा एक दिन अकेला शिकार को गया, जाते२ एक महाबन में जा निकला, एक शेर वहां नज़र आया, बाघ को देख वुह बहुत डरा, घोड़ा

वहीं छोड़ एक वृक्ष पर चढ़ गया, उस के ऊपर जो देखे तो एक रीछ बैठा है * रीछ को देखते ही, उस के हाथ पांव फूल गये, और कांपने लगा, चाहे कि बेताब हो कर गिरे, इस में वुह रीछ बोला, कि ऐ कुंवर! तू अपने मन में भय मत कर, मैं तुझे नहीं खाने का क्यों कि, तू मेरी सरन आया है, मैं ने तुझे जी दान दिया, अब तू निस्संदेह होकर आनंद से यहां बैठ * यह बात रीछ से सुन, उस के जी में जी आया: इस में दिन बीत गया और रात ऊई तब वुह रीछ बोला, राजपुत्र! अब रात ऊई, यह नाहर शत्रु हम दोनों का बैठा ऊआ है, इस वक़्त सोना जी का ज़ियान है, बिहतर यह है, कि दो२ पहर रात हम आपुस में जागें, आधी रात तू जाग, और आधी रात मैं. राज पुत्र ने कहा बऊत अच्छा, रीछ ने कहा पहिले दो पहर रात को तू सो रह, मैं अब जागता ऊं, और पिछले दो जाम निशा को तू जागियो, मैं सो रऊंगा* आपुस में इस तरह दोनों ने क़रार किया राज पुत्र सो रहा वुह रीछ बैठा और चौकी देने लगा, इस में शेर ने रीछ से कहा, तू मेरी बात सुन और अज्ञानी मत हो, यह मनुष्य भक्ष है हमारा, और तू क्यों विष का बीज बोता है, इसे नीचे डाल दे, हम दोनों खाजायें, यह आदमी है, और हम तुम दोनों बनबासी हैं, हाथ का मानिक गिर के फिर हाथ नहीं आता जब यह जाग उठेगा और तू सोवेगा, तो वुह तेरा सिर काट कर फेंक देवेगा, अब यही बिहतर है, कि मेरा कहना कर, फिर यह औसर न पावेगा, आख़िर को तू पछतावेगा * रीछ ने जवाब दिया, कि सुन अज्ञान बाघ! अपने ऊपर

अपराध होना उचित नहीं, जितना होता है पाप राजा के मारने, और वृक्ष के काटने, गुरू से झूठ बोलने, और बन जलाने, और विश्वास घात करने से इतना ही होता है सरनागत के मारने से. इन सब का पाप महा पाप है, और यह पाप किसी तरह छूटता नहीं, इन्ने मेरी सरन ली है, क्या ऊआ जो एक जीव मैं ने न खाया? तब बाघ खफ़ा होकर बोला, कि तूने मेरा कहा तो न माना, मैं भी तुझे जीता न जाने दूंगा, इतने में रीछ की बारी तो पूजी, और राज कुंवर जागा, फिर रीछ सोया वुह चौकी देने लगा, उस से भी यही बात बाघ ने कही, कि भाई! जो मैं कहूं सो तू सुन, भूल कर भी तू इस से मत पतया, सो कर सुबह को जब उठेगा अलसा कर तुझे खा जायगा, वुह यह मुझ से कह चुका है कि सो कर उठूं तो मैं खाजाऊं, इस से यह भला है कि तू पहिले ही इस रीछ को गिरा दे, जो मैं इसे खाजाऊं, और अपनी राह लूं, तू भी सहीह सलामत अपने घर को जा * उस के प्रबोधने से यह बातों में आगया, और उस टहनी को पकड़ ऐसा हिलाया, कि जिस से वुह रीछ तले गिर पड़े, उस में उस की आंख खुल गई, और टहनी से लिपट कर रह गया, और इस से कहा फिट ऐ पापी! जो तूने मुझ से यह सलूक किया, मैं ने तेरी जान रक्खी, और तू मत हीन, मेरे मारने को तैयार ऊआ, अब जो मैं तुझे मार कर खाजाऊं तो क्या कर सकता है? यह बात रीछ की सुनते ही उस की जान सूख गई, अपने दिल में जाना, अब यह मुझे मुक़र्रर खायगा, इस में सवेरा होगया, बाघ उठकर वहां से चला गया, रीछ ने उस के कानों में मूत दिया,

और कहा कि तुझे जी से तो क्या मारूं, क्योंकि अब यहां कोई तेरा बचाने वाला नहीं है, इस से असमर्थ जान कर मैं तुझे छोड़ देता हूं, यह कह कर रीछ तो चला गया, और वुह गूंगा, बहिरा हो वहां से बहुत घबरा, व्याकुल हो नगर में आया. राजा उसकी दशा देख अपने जी में चिंता करने लगा महलों में जो खबर गई तो रानियां कूक मार२ रोने लगीं, और कहने लगीं, कि भगवान ने यह क्या अयुक्त किया, कोई कहने लगी, किसी ने इसे छला है, तिस से इसकी यह हालत होगई है, राजा ने सोच कर दीवान से कहा, कि जितने लोग हैं जंत्र मंत्र जानने वाले नगर में उन सब को बुलवा कर कुंवर को दिखलाओ * प्रधान ने आदमियों को भेज सब सियानों को बुलाया और उन से कहा, जिस में इसे आराम हो सो किया चाहिये, वे अपने मंत्र जंत्र करने लगे, जिस क़दर कि उन्हों ने इस का उतार किया कुछ फ़ायदः न हुआ * हारकर उन सभों ने जवाब दिया, कि हमारी विद्या यहां कुछ काम नहीं करती * अब मंत्री ने यह देखा कि उन्हों के गुनों से इसे कुछ आराम न हुआ राजा से हाथ जोड़ कर बिनती की महाराज! मेरे पुत्र की बहू जो है, सो बड़ी गुनवती है, आप आज्ञा कीजिये तो मैं उसके तईं ले आऊं और वुह कुंवर को देखे, भगवान चाहे तो आराम हो जायगा * इस के सिवाय और जतन नहीं * राजा ने कहा तेरे बेटे की स्त्री क्या जाने, फिर दीवान ने कहा महाराज! वुह एक जोगी की चेली है, उस जोगी ने जंत्र मंत्र विद्या सब उसे सिखा दी है. राजा ने आज्ञा दी और दीवान सवार हो अपने घर को गया, वहां चि-

चकार को बुला, सब अवस्था वहां की कही, और कहा कि मैं इस तरह से राजा को बचन दे आया हूं, तू स्त्री का भेष बना कर मेरे संग हो ले, उसने क़बूल किया, और स्त्री भेष बन साथ होलिया, दोनों सवार होकर राजा के पास आये * लोग महल में उसे परद: कर के लेगये,[38] दरमियान एक क़नात खैंचली, और उस तरफ़ क़नात के उसे बिठाया, राजा, और लड़का, और दीवान, ये तीनों क़नात के बाहर बैठे, और उसने क़नात के अंदर से कहा कि कुंवर को आस्नान करवा, कपड़े बदलवा, चौका दिलवा,[39] एक पटड़ा बिछवा कर बिठाओ. और कुंवर से कहा कि तू सावधान होकर बैठ, और जो मैं मंत्र कहूं सो तू कान देकर सुन * बिभीषन बड़ा सूर, बीर था और दग़ा करके रामचंद्र से जा मिला, उस ने रावन का राज सब ख़राब किया, अपने कुल का नास किया, उस लाज से एक बरस तलक सिर न उठाया, और अपने किये का फल पाया, कि सब कुल गंवाया, और भस्मासुर ने महादेव की तपस्या कर, बर पाया, और उन्हीं से बिस्वास घात किया, कि पारबती के लेने की इच्छा की, और उसका भी फल उसने तुर्त पाया, कि छन भर में जल के भस्म हो गया, और कुंवर तू मित्र द्रोही और बिस्वास घाती क्यों हुआ कि सोते हुए रीछ को तू ने क्यों ढकेला? उन्ने तो तेरा उपकार किया था, तूने उसका बुरा बिचारा, पर इस में तेरा दोष कुछ नहीं है, तेरे पिता का दोष है, इसवास्ते कि जैसा बीज बोवेगा, वैसा ही फल होवेगा, यह तुम ने अपने पिता के पाप से दुख पाया * इतनी बात सुनते ही कुंवर सचेत हो बोल उठा. तब राजा बोला ऐ सुन्दरी! तू

सच कह कि तू ने वुह बन का जानवर क्योंकर पहिचाना? यह सुन कर उसने जवाब दिया कि राजा! मैं अपनी पूर्व अवस्था तेरे आगे प्रगट करूं हूं सुन, जब मैं अपने गुरू के पास पढ़ने को जाती थी, तब गुरू की अति सेवा करती थी, गुरू ने प्रसन्न हो एक मंत्र मुझे बता दिया, वुह मंत्र मैं ने साधा, तब से सरस्वती मेरे मन में बसी है, और जैसे मैं ने रानी की जांघ का तिल पहिचाना, वैसे ही बन के रीछ को भी जाना. यह सुनते ही राजा ने प्रसन्न हो परदः दरमियान से दूर कर दिया, और कहा कि तू सच सारद पुत्र है, तेरे गुन को मैं ने अब जाना, यह कह राजा ने आधा राज उसे दिया, और अपना मंत्री किया * इतनी बात कह वुह बिराह्मन बोला, कि राजा बीर-बिक्रमाजीत! इस स्लोक का यह अर्थ है. यह कथा उस बिराह्मन से सुन कर राजा बीरबिक्रमाजीत ने हज़ार गांव छत्त कर दिये. ये बातें करके पुतली बोली कि सुन राजा भोज! तुझ में इतना गुन कहां और इस जग में बिक्रम समान राजा होना मुश्किल है, मैं ने तुझ से यह सच बात कही, और तू इस सिंहासन जोग नहीं." उस दिन की भी साम्रथ योंहीं जाती रही, राजा महल में दाखिल हुआ, दूसरे सुबहः को उठ, स्नान, पूजा कर ध्यान लगा, सिंहासन के पास आ खड़ा रहा, और प्रधान को बुलाकर कहा कि, "मेरा जी चाहता है, कि सिंहासन पर आज बैठूं, बिहतर है कि द्विघड़िया अच्छी महूर्त इस वक़्त मुझे देख दो." दीवान ने कहा महाराज! आप तो बैठियेगा, पर ये पुतलियां आप२ को रो२ मरेंगीं राजा ठठक रहा और *

* सुन्दरवती सोलहवीं पुतली *

बोली, "सुन राजा! मैं तुझ से बिचार कर कथा का अह्वाल कहती हूं * उज्जैन नगरी में छत्तीस कौम और चार जात बसती थीं, एक वहां का नगर सेठ जिस के यहां अति धन था, और बड़ा प्रतापी था, नगर२ के लोगों को ब्यौहार करने के लिये बऊत माया देता लेता था, जो कोई उसके पास अपना स्वारथ बिचार कर आता था, वुह खाली फिर कर नहीं आता था. उसका एक बेटा रत्नसेन नाम और बऊत सुन्दर था, और अति बिद्यावान, माता पिता की आज्ञा में निस दिन रहता, उस सेठ के मन में आई कि कहीं अच्छी कन्या ठहरा उसका ब्याह करदें, बिराह्मनों को बुला देस२ भेजा और कह दिया जहां कहीं अच्छी लड़की ठहरे वहां का टीका लेके तुम आ ओ गे तो बऊत कुछ तुम्हें दूंगा, और कुछ रुपये खर्च को दे, बिदा किया. बिराह्मन देस२ ढूंढने को गये, उन में से एक बिराह्मन ने समाचार पाया, कि समुद्र पार एक सेठ है और उसकी बेटी बऊत सुन्दर है, उसे भी बर की तलाश है, यह सुन कर एक जहाज़ पर बैठ समुद्र पार गया, वहां जा सेठ का ठिकाना पूछ कर उस के दुवारे पर ठहरा, और खबर की कि उज्जैन नगरी से एक बिराह्मन वहां के सेठ का आया है * यह खबर सुन उस सेठ ने उस को बुलाया, और दंडवत कर आसन दे बिठाया, बिराह्मन असीस देकर बैठा, सेठ ने पूछा किस कारज के लिये तुम आये हो सो कहो. बिराह्मन ने कहा, हमारे सेठ ने भेजा है,

लड़के की शादी के लिये, और कह दिया है जहां कन्या अच्छे कुलीन की ठहरे वहां का टीका ले हमारे पास पहुंचो. सेठ यह सुनकर बोला, मेरी भी यही इच्छा थी, कि पुत्री का ब्याह मैं कहां करूंगा, पर भगवान ने घर बैठे संजोग बना दिया, फिर कहा कितने दिन तुम यहां आराम करो, मैं अपना पुरोहित तुम्हारे साथ कर दूंगा, वुह लड़के को देख टीका जाकर देगा * और तुम भी इस लड़की को देख लो, और वहां जाकर उस सेठ से कहो, कि हम अपनी आंखों देख आये हैं, वुह बिराह्मन कितने दिनों वहां रहा, और उस कन्या को अपनी आंखों देख, सेठ के बिराह्मन को साथ ले उज्जैन नगरी को फिर चला. उस सेठ ने अपने पुरोहित से कह दिया, कि टीका दे ब्याह की जल्दी कर आना. ये दोनों वहां से चल जहाज़ पर चढ़, कितने दिनों में उज्जैन-नगरी में आन पहुंचे, बिराह्मन ने सेठ को ख़बर दी, कि मैं कन्या ठहरा आया हूं, और उस सेठ का पुरोहित साथ लाया हूं, सेठ ने उस बिराह्मन को बुलाया, और लड़के को अपने पास बैठा दिखलाया, बिराह्मन ने देख उसे तिलक कर दिया, और हाथ जोड़ अपने सेठ की तरफ़ से बिनती कर कहा, कि आप जल्दी से बरात लेकर आइये, हम जाकर वहां तैयारी करते हैं, फिर रुख़सत होकर सेठ से वुह बिराह्मन अपने मुल्क को गया * वहां जा सेठ से यहां का सब समाचार कहा, सेठ सुनकर ब्याह का सामान करने लगा, और इधर यह सेठ ब्याह की तैयारी करने. नक़ार ख़ाने में नौबत बजने लगी, और घर में मंगलाचार होने लगे, तरह२ की तैयारियां कीं, जितने

कुनबे के लोग थे उन को नये२ जोड़े पहना, अपने साथ लेजाने को मुकर्रर किया, नाच, राग रंग, ख़ुशी से होने लगे. इस तरह तमाम शहर की ज़ियाफ़त करते२ बरात की तैयारी करते, व्याह का दिन नज़दीक पहुंचा. ग़र्ज़ कि जाना दूर का था, फ़िक्र करने लगा कि अरसः थोड़ा रहा है, समुद्र पार हम इतने दिनों में क्योंकर जा सकेंगे, यह बात सुनकर उस के सब भाई बंधु अंदेशः करने लगे, और ख़ुशी तमाम शादी की भूल गये * इस में एक शख़्स ने आकर उस सेठ से कहा, कि इस बर कन्या की प्रालबध होगी तो इस लग्न में बिवाह होगा, और मैं एक जतन बताता हूं तुम उस की फ़िक्र करो, भगवान चाहे तो बनजाय तब उन्ने हाथ जोड़ कर कहा कि भाई, या तो भगवान के हाथ हमारी लज्जा है, या तेरे हाथ, जिस में हमारा काम बने सो तू कह, तब वुह कहने लगा, कई एक महीने हुए हैं कि एक बढ़ई उड़न खटोला बनाकर राजा के पास लेआया था, और वुह कहता था, कि इस खटोले का यह सुभाव है कि इस पर बैठकर जहां तुम्हारी इच्छा हो तहां जाओ, यह पहुंचावेगा, राजा ने सुन कर उसको दो लाख रुपये दिये, और खटोला लिया, वुह अब राजा के घर में है, तुम जाओ, और राजा से मांगो, जो तुम्हें राजा दें, तो तुम्हारा सब काम सिद्ध हो * यह सुनते ही वुह ख़ुशी होकर राज दुवार पर गया, और दुवारपाल से कहा, मेरी ख़बर महाराज से करदो, दरवानों ने दीवान से जाकर अर्ज़ की कि नगर सेठ दुवारे पर हाज़िर है, आप की आज्ञा हो तो राजा के दरशन को आवे, दीवान ने कहा कि बुलाओ.

दरवान आकर उसे लेगये, उसने जाकर दीवान को दंडवत की, और बिनती कर कहने लगा, कि महाराज के दरशन को मैं आया हूं, और अपना बड़ा ज़रूर काम लाया हूं. यह सुन कर मंत्री ने कहा कि राजा महल में हैं, सेठ यह सुन अति उदास हुआ, कहा मेरा बड़ा कारज था, कि लड़के की शादी है, और जाना समुद्र पार, चार दिन बाक़ी रह गये हैं, इस में जो न पहुंच सकूं, तो मेरे कुल की हंसी होगी. बनिये से यह बात सुन कर दीवान ने राजा से आकर हक़ीक़त ज़ाहिर की, राजा ने आज्ञा दी कि वुह उड़न खटोला उसे लेजाकर दो, और जो कुछ वुह कहे सब उस की तैयारी कर दो, जो किसी तरह उसके काम में विघन न होने पावे* प्रधान ने खटोला मंगवा बनिये को दिया, और कहा जो कुछ सामान तुझे दरकार हो सो कह महाराज का यों हुकम है, तब सेठ ने कहा * महाराज की दया से सब कुछ है, मेरी यही ज़रूर थी, और आप की कृपा से सब काम सिद्ध होगा. महाजन खटोला लिये अपने घर को आया, बिराह्मन को बुलाकर साथ लिया, लड़का और आप उस पर बैठ समुद्र पार चला, कुछ एक अरसे में वहां जा पहुंचा, और वहां जाकर देखे तो मंगला चार सारे नगर में हो रहा है और सब राह देख रहे हैं, जब लोगों ने देखा तो हाथों हाथ लेगये, जाकर एक हवेली में उतारा, और अपने सेठ को खबर दी, कि तुम्हारा समधी बरात ले आ पहुंचा है, वुह सेठ भी वहां से उस की मुलाक़ात को आय आया, और देखकर इन तीन आदमियों को अपने जी में बहुत पछताया, और पूछा क्या

सबब है जो तुम इस तरह से आये हो? तब उसने ब्यौरा, और सब अवस्था अपनी सुनाई, सुनते ही उस सेठ ने अपने गुमाश्ते से कहा कि कल ब्याह है, और आज बरात की तैयारी सब तुम जल्दी करदो, कि जिस में शहर के लोग न हंसें, उसने सब तैयारी बात कहते ही कर दी, दूसरे दिन बरात लेकर यह सेठ ब्याहने गया, और बेटे का ब्याह किया. उस सेठ ने हाथी, घोड़े, जोड़े, पालकी, मियाने, जड़ाऊ गहने और बहुत सा कुछ दान दहेज़ दिया, यह वहां से सब लेकर जहाज़ में रखवा आप सवार हो अपने शहर में आया, और फिर नए सिर से शादी रचाई, बिराह्मनों को बहुत कुछ दान दिया, और कुछ जवाहिर, पोशाक और बअ़्ज़े तुह्फ़ः और तहायफ़ थालों में रख, और चार घोड़े ख़ासे लेकर राजा की नज़र को चला और वुह खटोला जो लेगया था, वुह भी फिर देने * जब दुवारे पर पहुंचा दुवार पालों से कहा, कि महाराज को मेरी ख़बर दो, राजा ने ख़बर सुन, उसे बुलालिया, और जो कुछ यह लेगया था जाकर सब राजा की भेंट किया, और कहा महाराज! आप के पुन्य प्रताप से सब काम अच्छा हुआ, अब इस दास की भेंट आप को क़बूल करनी होगी, राजा सुन हंसकर बोला कि मेरा यह सुभाव है, कि दी हुई चीज़ में फिर नहीं लेता, यह खटोला मैंने तुझी को दिया, और जो कुछ तू तोह्फ़ः लाया है, ये सब तोह्फ़ः और लाख रुपये अपने ख़ज़ाने से और हम ने तेरे बेटे को दिये, इस वास्ते कि उसकी शादी हुई है, ग़रज़ ये सब कुछ इनायत करके पान दे, उसे रुख़सत किया यह प्रसन्न हो अपने

घर को आया" * इतनी बात कह वुह पुतली बोली, "सुन राजा भोज! राजा बीर बिक्रमाजीत की बराबरी इंद्र भी नहीं कर सकता था, और तू तो किस गिनती में है, जो तू ने अपना मन बढ़ाया है, इस से तू बाज़ आ" * इन बातों में वुह भी दिन गुज़र गया, राजा महल में दाखिल ऊआ, रात जिस तिस तरह गुज़री. फिर जब सुबह ऊई राजा सिंहासन के बैठने का इरादः कर वहां आया कि *

* सत्यवती सतरहवीं पुतली बोली *

"सुन राजा भोज! एक दिन राजा बीरबिक्रमाजीत सभा में इंद्र समान बैठा था, और गंधर्व मधुर२ सुरों से गा रहे थे पातुर नृत्य कर भाव बता रहीं थीं, कहीं भाट खड़े ऊए जस बरनन कर रहे थे, किसी तरफ़ बिराह्मन बेद पाठ कर रहे थे, किसी तरफ़ मल्ल आपुस में युद्ध कर रहे थे, और किसी तरफ़ चीते, कुत्ते, सियाह-गोश, हिरन, मेंढे, मीर शिकार लिये खड़े थे, और जितनी तैयारी राजाओं की चाहिये सब थीं: सभा में एक से एक पंडित, चतुर, और बीर बैठे थे, उन में राजा, इंद्र की तरह बैठा था, और सब सामान इंद्र के अखाड़े का सा था * इस में राजा ने अपने चित में बिचार कर पंडितों से कहा, कि तुम एक बात मेरी सुनों, कि स्वर्ग में राजा इंद्र जो है सो मर्त्य लोक का सब मरम जानता है कहो कि पाताल का राजा कौन है? और किस जगह वुह रहता है? तब उन में से एक पंडित बोला, कि महाराज! पाताल का राजा

शेषनाग है, जिसके हज़ार फन हैं, और पद्मनी रानी उसके यहां है, और कभी सोग, सन्ताप उसे नहीं व्यापता, आनंद से अचल राज वहां का वुह करता है, और जैसा वुह राजा सुखी है, वैसा संसार में कोई नहीं * यह सुनकर राजा को उसके मिलने की इच्छा ऊई; बैतालों को बुलाकर कहा, कि मेरे तईं पाताल को लेचलो, मैं शेषनाग के दरसन को जाऊंगा: बैताल उठाकर पाताल को लेगये, और शेषनाग का दूर से मंदिर दिखा दिया, राजा ने दूर से देख बैतालों को बिदा किया, और आप मंदिर को चला. जब जाकर उसके पास पऊंचा, देखे तो वुह कंचन का मंदिर, रत्न जड़े ऊये, जगमगा रहा है, और ऐसी जोति है उसकी, कि जिस में रोशनी के सिवाय रात, दिन कुछ नहीं मञ्लूम होता. दुवार२ पर कंवल के फूलों की बंदनवारें बंधीं ऊई हैं, और घर२ आनंद हो रहे हैं. राजा कुछ डरता२ कुछ ख़ुशी२ दुवारे जा खड़ा ऊआ; और वहां के दुवार पालों से दंडवत कर कहा, महाराज को हमारा समाचार पऊंचाओ, कहो कि मर्त्य लोक से एक राजा आप के दर्शन को आया है, दरबान राजा को ख़बर देने गया, और यह दुवार पर खड़ा ऊआ कहता था, धन्य भाग! हैं मेरे कि मैं यहां तक आन पऊंचा ऊं, और चारों तरफ़ से राम कृष्ण२ की आवाज़ आती थी, और राजा के मंदिर से बेद की धुनि कान पड़ती थी, जब दरबान राजा के सनमुख आ प्रनाम कर हाथ जोड़ खड़ा ऊआ, राजा ने उसकी ओर दृष्टि की, उसने कहा महाराज! एक मनुष्य दुवारे पर खड़ा है, और कहता है कि मर्त्य लोक से आया ऊं, दुवारे को

हज़ारों दंडवतें करता है, बल्कि जिस को देखता है उसको भी, आप के दर्शन की अभिलाषा है, जिस से निहायत बे चैन है; यह बात सुनते ही शेषनाग उठ के दुवारे पर आया * राजा ने देखते ही अष्टांग प्रनाम किया, और उसने हंसकर आशीष दी, और पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है, और कौन सा देस है? राजा ने हाथ जोड़ कर कहा, कि स्वामी! बिक्रम भूपाल मेरा नाम है, और मर्त्य लोक का राजा हूं, आप के चरन दर्शन की मुझे इच्छा थी, सो मेरे मन की इच्छा पूरी हुई, आज मुझे कड़ोड़ यज्ञ का फल हुआ, और कड़ोड़ों दान किये का पुन्य, और धन्य भाग! मेरे जो आप के चरन कंवल के दर्शन हुए, बल्कि चौंसठ तीरथ न्हाने का मुझे फल हुआ * बिक्रम का नाम सुनते ही, शेषनाग मिला, और हाथ पकड़, अपने मकान में ले गया, अच्छी जगह बैठा, क्षेम कुशल पूछी, राजा ने कहा महाराज के दर्शन से सब आनंद हैं, फिर कहा तुम किस कारन यहां आये हो? और आते हुए पथ में तुम ने बहुत कष्ट पाया होगा, बिक्रम बोला कि फणिनाथ! मैं ने जो कष्ट पाया सो सब तुम्हारे दर्शन किये से बिसरा. फिर राजा को रहने के लिये एक अच्छा स्थान दिया, और बहुत से लोग टहल करने को, और उन लोगों से कह दिया, कि मेरी सेवा से भी तुम अधिक राजा की सेवा जानना. इस तरह से पांच, सात दिन राजा बिक्रमाजीत वहां रहा; बअ्द उसके एक दिन हाथ जोड़ कर कहा पृथवी नाथ! मुझे बिदा कीजिये, तो मैं अपने नगर में जाऊं, और वहां बैठ आप का गुन गाऊं. तब शेष ने हंस कर कहा, कि अब राजा तुम्हें अव

जाने की इच्छा हुई है, भला कुछ प्रसाद हम देते हैं, तुम लेते आओ. यह कह चार लअल मंगवा राजा को दिये, और उसका गुन कहने लगा, एक रत्न का यह सुभाव है, कि जितना गहना चाहोगे सो यह तुम्हें देगा, और छिन, भर देते बिलंब न करेगा. और दूसरे नग का यह सुभाव है कि हाथी, घोड़े, पालकियां जितनी तुम मांगोगे, उतनी इस से पाओगे. और तीसरे लअल का यह गुन है, कि जितनी लक्ष्मी चाहोगे, उतनी यह देगा. और चौथे रत्न का यह प्रभाव है, हरिभजन और सत कर्म करने की जितनी इच्छा रक्खोगे, उतनी यह पूरी करेगा * इस तरह चारों लअलों के गुन राजा से समझा कर कहे, और बिदा किया. राजा हाथ जोड़ कर खड़ा हो कहने लगा, महाराज! मैं आप के गुन की उपमा नहीं दे सकता, पर आप मुझे दास समझ कर कृपा रखियेगा, यह कह कर राजा वहां से रुख़सत हुआ, और बैतालों को बुला सवार हो, अपने नगर को आया, जब कोस एक नगर रह गया; तब बैतालों को छोड़, आप राजा पांओं२ शहर को चला. देखता क्या है, कि एक दुर्बल, भूखा बिराह्मन चला आता है, जब वुह पास आया, यह उसने कहा, कि मैं भूखा हूं, कुछ मुझे भिक्षा दे, जो मैं जा कर कुटुंब को पालूं * सुनते ही चिन्ता कर अपने मन में कहने लगा, इस बिराह्मन को इस में से एक लअल दूं, यह बिचार कर बिराह्मन से कहा कि देवता! मेरे पास चार रत्न हैं, और चारों के गुन ये हैं, जो तू इन में से चाहे वुह मैं तुझे दूं; तब बिराह्मन ने कहा, कि पहिले अपने घर हो आऊं, तब तुम से कहूं.

यह कह कर बिराह्मन अपने घर को गया, और राजा वहां खड़ा रहा, वुह घर में आकर अपनी स्त्री, और पुत्र, और पुत्र की बहू से कहने लगा, कि उन चारों लश्रलों का यह ब्यौरा है; उन तीनों में से उसकी बिराह्मनी बोली, कि स्वामी! तुम वुह लश्रल लो जो लक्ष्मी दे है, और खियाल मन से उठा दो, क्योंकि लक्ष्मी से मिलते हैं सहाय, और लक्ष्मी से होते हैं सब उपाय, धर्म, ज्ञान, नेम, पुन्य, दान यह सब लक्ष्मी से होता है, इस से तुम और तरफ़ चित मत डुलाओ जा कर लक्ष्मी ले आओ * फिर उसका पुत्र बोला, कि लक्ष्मी किस काम की है जो साथ सामान न हो, और जो सामान हो तो राजा कहावे, और सब कोई सिर निवावे, सरंजाम हो तो दुर्जन डरें, और संसार में शोभा पावे, जो लक्ष्मी हुई और जग में शोभा न पाई तो उस पुरुष का जन्म लेना निर्फल है, तुम वुह लश्रल लो जो संसार में शोभा दे * इतने में उसके बेटे की बहू बोली, कि तुम वुह लश्रल लो जो आभूषण दे, कि गहने के पहिन्ने से स्त्री अपसरा मश्रलूम हो, जो रांड भी पहने तो अति सुन्दरी दिखाई दे, और बिपत पड़े तो बेच२ बहुत सा धन ले, और जितना मांगोगे उतना उस्से पाओगे, और कितना बिला ओगे पुरुष हमारा बावला है, और सास बुद्धि हीन है, इस्से ससुर! तुम सज्ञानी हो, और तुम से मैं कहती हूं वही लश्रल ले आओ जो मैं ने तुम से कहा है, उस से तुम सब कुछ पाओगे * यह सुन कर बिराह्मन बोला कि तुम तीनों बौराये हो, और मेरी इच्छा सिवाय धर्म्म के और किसी पर नहीं, क्योंकि धर्म्म से संसार में आदमी राज पाता है, और धर्म्म से

सब काम सिद्ध होते हैं, और धर्म से जग में जस होता है, और धर्म करने से देखो कि राजा बलि ने पाताल का राज पाया, और धर्म से राजा इंद्र ने स्वर्ग में जा इंद्रासन पाया, और धर्म से यह काया अमर हो जाती है, गर्भ बास छुट जाता है, इस से तुम मेरा धर्म मत डुलाओ, और मैं भी अपना सत न छोड़ूंगा, इस में जो हो सो हो * इसी तरह चारों ने चार मति की बातें कहीं, एक की एक ने न मानी, तब वुह बिराह्मन फिर कर राजा के निकट आया, और आकर सब अहवाल सुनाया, कहा कि महाराज! मैं घर तो गया पर बात कुछ बन न आई, अपनी२ सब कोई कहता है, और हम चारों की चार मति हैं, और आप ने यहां खड़े हो कर हमारे लिये दुख पाया, पर हमारा मता बन न आया * यह सुन राजा ने कहा कि महाराज! तुम अपने चित में निरास होकर उदास न हो, चारों लअ़ल तुम अपने घर ले जाओ, मैं तुम्हें देता हूं, क्योंकि, जिस में तुम्हारा कुटुम्ब भी प्रसन्न हो, और तुम भी: हमारा इसी में कल्यान है. निदान राजा ने चारों लअ़ल खुश हो के बिराह्मन के हाथ दिये; बिराह्मन लेकर असीस दे अपने धाम को गया. सुन राजा भोज! राजा बीर बिक्रमाजीत भी अपने मंदिर को आया और देते दान कुछ बिलंब न लाया * ऐसा दानी अब इस कलियुग में कौन है जो उस के समान दान दे? वुह इस आसन पर बैठे, और नहीं तो नर्क बास पावे, अभी तू अपने जी में मत उकता, धीरज धर और आगे कथा सुन जो२ राजा ने साहस और दान किये हैं." यह बात पुतली की सुनकर राजा सिंहासन के पास

से उठकर घर में आया, सारी रात सोच और चिंता में गंवाई, सुबह होते ही स्नान, पूजा, करके बैठा; इतने में दीवान, प्रधान आकर हाज़िर हुए, सब को साथ ले सिंहासन के पास जा चाहे कि पांव उठा कर धरे कि

* रूपरेखा अठारहवीं पुतली *

हां२ कर उठी और कहा, "कि राजा मुझ पर दया कर, पहले मेरी बात सुन, तिस पीछे जो इच्छा में आवे सो कर." तब राजा बोला, "तू कह जो तेरे चित में है." वुह पुतली कहने लगी कि, "सुन राजा भोज! एक दिन दो सन्यासी आपुस में जोग की रीत से झगड़ते थे, न वुह उस से जीत सकता था, न यह उस से. आख़िर इस तरह झगड़ते२ बीर बिक्रमाजीत पास आये और कहा कि महाराज! हम दोनों बिवादी हैं, इस का आप न्याव चुकावें, आप धर्मात्मा राजा हैं, यह समझ कर हम आये हैं. राजा ने कहा मुझ से समझा कर तुम ज़ाहिर करो, कि किस बात पर झगड़ा है? उन में से एक जती बोला महाराज! मैं कहता हूं, कि मन के बस में ज्ञान है, और मन के बस आत्मा है, और मन के बस देह है, और माया मोह पाप, पुन्य ये भी सब मन से हैं, और जितनी बातें हैं ये मन के ताबिअ़ हैं, और मन की इच्छा ही से सब होता है, मन राजा है तमाम शरीर का, और जितने अंग हैं, सो मन के आधीन, मन उन से जो काम लेता है सो करते हैं, एक दोनों में से यह अब कह चुका,

तब दूसरा बोला सुनो राजा! निश्चय कर के जो मैं कहूं. ज्ञान जो है यही राजा है, देह का, और मन जो है उस के ताबिअदार है, जो कदाचित मन अपना अमल किया चाहे तो ज्ञान से कुछ उसका बस नहीं चलता, मन के क़ाबू में हैं इंद्रियां, वुह चाहे तो उन से कर्म करवावे पर ज्ञान नहीं करने देता, जब ज्ञान आता है तो मन को मार कर निकाल देता है, और पांचों इंद्रियां भी ज्ञान के खड्ग से कटी ऊई हैं. जब मनुष से मन और इंद्री का बिकार छूटा, निर्भय ऊआ संसार के भय से और जोग सिद्ध ऊआ. दोनों की ये बातें सुन कर राजा बोला, कि तुम ने जो कहा सो मैं सब समझा, इसका उत्तर बिचार कर तुम्हें दूंगा. कितनी एक देर के बअ़द राजा ने सोच कर कहा, कि सुनो योगेश्वर! चार बस्तु एक साथ रही हैं, अग्नि, जल, वायु, और, छार. इन चारों से शरीर है, मन इन का सरदार है, मन की मति से जो ये चलें, तो घड़ी पहर में नाश करदे, पर उन पर ज्ञान बली है, मन का बिकार होने नहीं देता, और जो नर हैं ज्ञानी, उनको काया बिनसने नहीं पाती, वे इस संसार में अमर हैं, और जब तक योगी ज्ञान से मन को न जीते, तब तक उस का योग सिद्ध नहीं होता * ये बातें राजा की योगियों ने सुन अपने मन का हठ छोड़ दिया. एक योगी ने प्रसन्न होकर राजा को एक खड़िया का ढेला देकर कहा, कि इस में ये गुन हैं, जो इस से दिन को तुम लिखोगे सो रात को प्रतच्छ सब देखोगे. यह कह कर जोगी दोनों चले गये. राजा ने अपने जी में अचरज माना कि यह बात किस तरह से सत्य होगी, तब राजा ने एक मंदिर

खाली करवाया, औ झड़वा, धुलवा, लिपवा, अकेले उस घर में जा बिछौना बिछवा, किवाड़ बंदकर, दीवार में मूरतें लिखने लगा. पहले कृष्ण की मूरति लिखी, पीछे सरस्वती की, फिर देवताओं की, इतने में सांझ ऊई, और एक बार ऐसे शब्द होने लगा, जो२ देवता लिखे थे सो साफ़ देखे, देखतेहीं राजा मोहित होगया, और जो२ बातें वे आपस में कहते थे, राजा सब सुनता, और देखता था, लेकिन भय से कुछ कह नहीं सकता था. इतने में प्रभात ऊआ, और देवताओं ने उठ२ अपनी२ राह ली, और वे पुतली की पुतलियां रह गईं. फिर राजा ने दूसरी तरफ़ दीवार में हाथी, घोड़े, पालकी, रथ, और फ़ौज यह सब कुछ लिखा, फिर जब शाम ऊई तो सब वे ज़ाहिर ऊए, राजा देख२ अपने जी में प्रसन्न होता था, और जोगी को याद करता था, कि मुझे वुह पदारथ दे गया. जब भोर ऊई, तब वुह फिर चित्र का चित्र रह गया, फिर तीसरे दिन राजा ने पहले एक मृदंगी लिखी, फिर गंधर्व लिखा, पुनि अपसरायें खैंची. ताल, बीन, रबाब, तंबूरा, मुहचंग, सितार, पिनाक, बांसुरी, करताल, अलगुज़:, एक२ साज़ एक२ मूरति के हाथ दे२ लिखी. जब संध्या का समैं ऊआ तब पहले एक शब्द ऊआ, और गंधर्व संगीत शास्त्र की रीत से गाने लगे, और सब साज़ सुरों के साथ मिल२ बाजने लगे और वे अपसरायें नृत्य करने लगीं, और भाव बताने * इस तरह से राजा हमेश: आनंद से रात काट-ता था, और दिन को यही लिखता था, इसी तरह से वुह रात दिन वहां बितीत करता, और रनवास में नहीं जाता था, रानियों के जी